निकोलाई गोगोल

१८०६–१८५२

निकोलाई वसीलियेविच गोगोल (१८०९–१८५२) का जन्म उक्राइना के एक साहित्यिक रुझानवाले कुलीन परिवार में हुआ। नेझिन नगर में उन्होंने माध्यमिक विज्ञान विद्यालय में शिक्षा पायी। यहां पढ़ते हुए ही उन्होंने लिखने के पहले प्रयास किये। विद्यालय की शिक्षा पूरी करके गोगोल शिक्षा और राज्य की सेवा करने तथा साहित्य के क्षेत्र में अपने को परखने का सपना लेकर पीटर्सबर्ग चले गये। १८२९ में उन्होंने व० आलोव उपनाम से एक स्वच्छंदतावादी खंड काव्य 'हांस क्यूख़ेलगार्तेन्' छपवाया, परंतु पाठकों और समीक्षकों ने इसका स्वागत नहीं किया, उलटे इसका मज़ाक उड़ाया।

१८२९ के अंत में गोगोल एक सरकारी दफ़्तर में नौकरी पाने में सफल रहे। उन्होंने लिखना जारी रखा, परंतु अब वह गद्य की ओर प्रवृत्त हुए और विषय-वस्तु भी उन्होंने वह चुनी, जिससे अच्छी तरह परिचित थे – उक्राइना की किंवदंतियां और जन-जीवन। १८३१ में 'दिकान्का के पास ग्रामीण संध्याएं' कथा-माला का पहला भाग प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक ने गोगोल को रातोंरात एक सफल लेखक बना दिया। कहानियों का प्रखर रोमांसवाद, सघन आंचलिक छटा, उत्कृष्ट हास्य और चित्ताकर्षक रहस्य-रोमांच – यह सब पाठकों और समीक्षकों को बहुत पसंद आया। अब लेखक के लिए साहित्यिक गोष्ठियों के द्वार खुल गये, पुश्किन और झुकोव्स्की से उनका परिचय हुआ। १८३२

में इस पुस्तक का दूसरा भाग निकला और तब एक प्रतिभासंपन्न युवा लेखक के नाते गोगोल का सिक्का पूरी तरह जम गया।

१८३४ में उन्होंने पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में विश्व इतिहास पर व्याख्यान दिये। उन्होंने कई ऐतिहासिक ग्रंथ लिखने की योजना बनायी, जिनका एक अंश 'अराबेस्क्स' संग्रह (१८३५) में शामिल हुआ। इसी वर्ष उन्होंने देशभक्तिपूर्ण ऐतिहासिक लघु उपन्यास 'तरास बुल्बा' की रचना की, जो 'मीरगरोद' नामक उनके नये संग्रह में छपा। तब से गोगोल की रचनाओं में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति यद्यपि पूरी तरह विलुप्त नहीं हुई, तथापि यथार्थवाद की तुलना में उसका स्थान गौण हो गया।

अब गोगोल की एक के बाद एक नयी रचनाएं छपने लगीं। पुश्किन की 'सोव्रेमेन्निक' पत्रिका में पाठकों ने उनकी 'नाक' कहानी पढ़ी, जिसे गोगोल ने 'पीटर्सबर्ग की कहानियां' नामक माला में रखा। इन्हीं दिनों गोगोल अपने हास्य नाटकों 'शादी' और 'इंस्पेक्टर जनरल' पर भी काम कर रहे थे। १८३६ में पीटर्सबर्ग में 'इंस्पेक्टर जनरल' का मंचन हुआ और प्रतिगामी हलकों ने इस पर भयंकर हंगामा मचाया। तब गोगोल विदेश चले गये। स्विट्ज़रलैंड में उन्होंने अपनी प्रमुख कृति 'मृत आत्माएं' नामक प्रबंध काव्य पर काम किया, जिसका विचार उन्होंने 'इंस्पेक्टर जनरल' से पहले ही बना लिया था। पेरिस में उन्हें पुश्किन के दुखद देहांत का समाचार मिला।

गोगोल ने विदेश में ही बस जाने का फ़ैसला किया। १८३९ में ही वह थोड़े दिनों के लिए रूस आये।

१८४१ में रोम में उन्होंने 'मृत आत्माओं' का पहला खंड पूरा कर लिया और उसके प्रकाशन के सिलसिले में फिर से रूस आये। १८४२ में पुस्तक प्रकाशित हुई। पाठक इससे अत्यंत प्रभावित हुए। अलेक्सान्द्र हर्ज़न के शब्दों में 'मृत आत्माएं' काव्य ने "रूस को झकझोर डाला"।

उधर गोगोल अपनी इस कृति को पूरा करने को उत्सुक थे। वह फिर से विदेश गये और रोम में रहने लगे। वहां उन्होंने 'गर्म कोट' कहानी और हास्य-नाटक 'शादी' पूरे किये, 'तरास बुल्बा' का नया संस्करण तैयार किया। १८४२ में उनकी रचनाओं का चारखंडीय संग्रह छपा। परंतु 'मृत आत्माओं' के दूसरे और तीसरे खंडों का काम लंबा ही खिंचता चला जा रहा था। गोगोल की यह कामना थी कि 'मृत आत्माओं' के नायकों का शुद्धिकरण हो और वे सच्चे रूसी चरित्र की नैतिक संपन्नता के प्रतीक आदर्श-सकारात्मक प्ररूप बनें। परंतु उनके ऐसे चमत्कारपूर्ण कायाकल्प के लिए वस्तुगत परिस्थितियां नहीं थीं, लेकिन गोगोल ने तत्कालीन रूसी जीवन की यथार्थ परिस्थितियों को नहीं, बल्कि अपने को, अपनी प्रतिभा को, अपने में आत्मिक शक्ति के अभाव को इसका उत्तरदायी ठहराया। इस प्रकार लेखक

में एक मानसिक संकट पैदा हुआ। साथ ही वह धार्मिक विश्वदृष्टिकोण से अधिकाधिक प्रभावित होते जा रहे थे और उनके मन में यह दोष-भावना घर कर गयी थी कि उन्होंने अपनी प्रिय मातृभूमि पर झूठे लांछन लगाये है। यह संकट 'मित्रों से पत्र-व्यवहार के चुने हुए अंश' (१८४७) नामक पुस्तक में सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ। इस पुस्तक में जहां एक ओर आश्चर्यजनक सूक्ष्मदृष्टि है, वहीं दूसरी ओर निरंकुशतंत्र, भूदासता प्रथा और चर्च का समर्थन किया गया है। पुस्तक के इन पहलुओं का महान रूसी क्रांतिकारी जनवादी विसारिओन बेलीन्स्की ने 'गोगोल के नाम पत्र' में साक्रोश विरोध किया। बेलीन्स्की की आलोचना से गोगोल को गहरी निराशा हुई।

मई १८४८ में वह रूस लौट आये, मास्को में रहने लगे और फिर से 'मृत आत्माओं' के दूसरे खंड पर काम करने लगे। परंतु गोगोल की धर्मांधता निरंतर बढ़ती जा रही थी, उनकी आत्म-प्रताड़ना की भावना अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी और १८५२ में हताशा के दौरे में उन्होंने अपनी रचना का दूसरा खंड जला डाला। इसके कुछ दिन बाद परिक्लांति से उनका देहांत हो गया।

गोगोल के कृतित्व का रूसी साहित्य पर अपार प्रभाव पड़ा है। यहां प्रकाशित उनकी कहानियों से पाठक गोगोल के रहस्य-रोमांच के स्वरूप और कुछ हद तक उसके विकास को भी आंक पायेंगे।

मई की रात, या डूबी लड़की

भगवान ही जाने कि इसका क्या मतलब लगाया जाये! अच्छे भले धर्मभीरु लोग कुछ करने का बीड़ा उठाते हैं और ख़रगोश का पीछा करते हुए शिकारी कुत्तों की तरह अपना ख़ून-पसीना एक कर देते हैं लेकिन उसका कोई भी नतीजा नहीं निकलता; पर जिस क्षण शैतान अपनी नाक घुसेड़ता है और अपनी दुम फटकारता है तब – जानते हैं आप – हर चीज़ जैसे आसमान से बरसने लगती है।

१

हान्ना

न० गांव की गलियों से एक सुरीला गीत गूंज उठा। गोधूलि की वेला थी, जब गांव के लड़के-लड़कियां दिन-भर के काम के बाद थककर संध्या के स्वच्छ आकाश की आभा में एक जगह जमा हो जाते हैं और अपनी उल्लसित आत्मा को गीतों में उंडेल देते हैं, जिनके सुरों में हमेशा उदासी की कसक होती है। विचारों में डूबी हुई संध्या ने उदास होकर गहरे नीले आकाश को गले लगा लिया और हर चीज़ में अस्पष्टता और विलगाव की भावना भर दी। झुटपुटा छाने लगा था, फिर भी गीत शांत नहीं हुए। गांव के मुखिया का बेटा, नौजवान कज़ाक लेव्को गीतों की धूम मचानेवालों से बचकर अपने हाथ में बंदूरा* लिये उधर आ निकला। उसने अपने सिर पर मेमने की खाल की टोपी पहन रखी थी। सड़क पर चलते हुए वह कज़ाक अपने बाजे के तारों को धीरे से छेड़ता जा रहा था और ठुमक-ठुमककर नाच रहा था। चेरी के पेड़ों से घिरी हुई एक झोपड़ी के दरवाज़े के सामने पहुंचकर वह शांत होकर रुक गया। यह किसका घर था? यह किसका दरवाज़ा था? कुछ देर चुप रहने के बाद उसने फिर बाजा बजाना और गाना शुरू कर दिया:

---

* तारवाला उक्राइनी अधगोला बाजा जो आम तौर पर उंगली पर हड्डी की बनी मिज़राब पहनकर बजाया जाता है। – सं०

सूरज डूबा, सांझ ने अपने पंख पसारे
आ जा, प्रीतम, तुझको मेरी प्रीत पुकारे

"नहीं, इस वक़्त तो मेरी सुंदर मृगनयनी सो रही होगी!" उसने अपने गीत के अंत पर पहुंचकर खिड़की के और पास जाते हुए कहा। "हान्ना! हान्ना! तुम सो रही हो या बाहर मेरे पास आना नहीं चाहतीं? तुम डरती होगी कि कहीं कोई हमें देख न ले, या शायद तुम अपना चांद-सा मुखड़ा बाहर सर्दी में निकालना नहीं चाहतीं! डरो नहीं: यहां कोई नहीं है। रात में हल्की-हल्की गर्मी है। और अगर कोई आ भी गया तो मैं तुम्हें अपने कोट से ढक लूंगा, अपनी पेटी तुम्हारे चारों ओर लपेट दूंगा और तुम्हें अपनी बांहों में समेट लूंगा— कोई भी हमें देख नहीं पायेगा। और अगर ठंडी हवा चलने लगी तो मैं तुम्हें अपने सीने से और कसकर चिपटा लूंगा, तुम्हें अपने चुंबनों से गरमाऊंगा, तुम्हारे छोटे-छोटे गोरे पांवों को अपनी फ़र की टोपी से ढक दूंगा। प्राणप्रिये, मेरी मीनाक्षी, मेरी हीरे की कनी—एक क्षण के लिए तो बाहर झांककर देखो। अपना गोरा-गोरा कोमल हाथ कम से कम खिड़की के बाहर तो निकालो... नहीं, तुम सो नहीं रही हो, तुम बड़ी अभिमानिनी हो!" वह और भी ऊंचे स्वर में कहता रहा, मानो अपनी इस क्षणिक उपेक्षा से लज्जित हो। "हालांकि तुम मेरा मज़ाक़ उड़ा रही होगी, क्यों, है न? अच्छा, मैं जाता हूं!"

यह कहकर वह झटके के साथ पीछे घूमा, अपनी टोपी सिर पर एक ओर झुका ली और धीरे-धीरे अपने बंदूरे के तार छेड़ता हुआ बड़े गर्व से खिड़की के पास से चला आया। उसी क्षण दरवाज़े का लकड़ी का हैंडिल घूमा: दरवाज़ा चूं-चूं करता हुआ खुला और चांदनी में नहायी हुई, सहमी-सहमी आंखों से चारों ओर देखती हुई और दरवाजे का हैंडिल पकड़े हुए सोलह साल की एक लड़की ने चौखट के पार क़दम रखा। रात के अंधेरे में उसके उद्दीप्त नयन स्वागत की ज्योति से नन्हे-नन्हे सितारों की तरह चमक रहे थे; उसके गले में लाल मूंगों का हार पड़ा हुआ था; युवक की तीव्र दृष्टि ने उसके गालों पर बिखरी हुई लाज की गुलाबी आभा को भी देख लिया था।

"ऐसी भी बेसब्री क्या," लड़की ने दबे स्वर में उससे कहा। "इतनी जल्दी रूठ भी गये! इस वक़्त आने की क्या ज़रूरत थी:

सड़क पर झुंड लोग आ-जा रहे हैं ... मैं तो थर-थर कांप रही हूं ..."

"अरे, मेरी कोमल सुकुमार सोनजूही की बेल, थर-थर कांपो नहीं! आकर मेरे कलेजे से लग जाओ!" युवा प्रेमी ने उसे अपनी बांहों में समेटते हुए कहा और गले में लंबे-से पट्टे से लटके हुए बंदूरे को एक तरफ़ हटाते हुए वह उसके साथ दरवाज़े की चौखट पर बैठ गया। "तुम जानती हो कि तुम्हें देखे बिना मैं घड़ी-भर भी ज़िंदा नहीं रह सकता।"

"जानते हो मैं क्या सोचती हूं?" लड़की उसकी आंखों में आंखें डालकर देखते हुए बोली। "एक हल्की-सी आवाज़ मेरे कान में कहती रहती है कि एक वक़्त ऐसा आयेगा जब हम एक-दूसरे से इस तरह बार-बार नहीं मिल सकेंगे। तुम्हारे यहां के लोग बड़े कमीने हैं: सारी लड़कियां कैसे जलकर देखती हैं, और छोकरे ... मैंने तो यह बात भी देखी है कि मेरी मां अब मुझ पर ज़्यादा कड़ी नज़र रखने लगी है। सच कहती हूं कि जब मैं अजनबियों के बीच रहती थी तो मैं ज़्यादा ख़ुश थी।"

ये अंतिम शब्द कहते हुए उसके चेहरे पर उदासी छा गयी।

"अपने गांव में वापस आये हुए दो ही महीने हुए हैं और तुम अभी से उकता गयीं। मैं समझता हूं कि तुम मुझसे भी ऊब गयी होगी।"

"अरे नहीं, तुमसे नहीं," उसने मुस्कराते हुए कहा। "तुम्हें तो मैं प्यार करती हूं, मेरे सलोने कज़्ज़ाक! मुझे तुम्हारी बादामी आंखों से प्यार है, जिस तरह वे मुझे देखती हैं उससे मुझे प्यार है—मुझे ऐसा लगता है कि मेरे अंदर मेरी आत्मा मुस्करा रही है, और इससे मेरा मन खिल उठता है; जिस दोस्ताना ढंग से तुम अपनी मूंछें फड़काते हो उससे मुझे प्यार है; जिस तरह तुम अपना बंदूरा बजाते हुए चलते हो उससे मुझे प्यार है, और मुझे तुम्हारा गाना सुनना अच्छा लगता है।"

"मेरी प्यारी हान्ना!" लड़के ने उसे चूमते हुए और उसे कसकर अपने सीने से भींचते हुए कहा।

"ज़रा ठहरो, लेव्को! पहले यह बताओ कि तुमने अपने बाप से बात की?"

"क्या?" उसने कहा, मानो सोते से चौंक पड़ा हो। "हां, मैंने

कहा तो था कि तुम और मैं ब्याह करना चाहते हैं।"

लेकिन जिस तरह उसने कहा कि "मैंने कहा तो था" उसमें कुछ घोर निराशा का भाव था।

"तो?"

"अब उसकी क्या कही जाये? उस बूढ़े ठूंठ ने हमेशा की तरह बात अनसुनी कर दी: मेरी बात तो सुनी नहीं और लगा मुझे डांटने कि मैं बिल्कुल बेलगाम ज़िंदगी बसर करता हूं और छोकरों के साथ आवारागर्दी करता रहता हूं। लेकिन, मेरी बुलबुल हान्ना, तुम बिल्कुल परेशान न हो! मैं तुमसे एक कज़ाक की हैसियत से अपनी इज़्ज़त की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं बात करके उसे राज़ी कर लूंगा।"

"तुम्हें तो बस इतना ही करने की ज़रूरत है, लेव्को, कि तुम एक बार कह दो, और जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा। मैं यह बात अपने अनुभव से जानती हूं: कभी-कभी मैं किसी बात के बिल्कुल ख़िलाफ़ होती हूं, लेकिन जब तुम कह देते हो तो जैसा तुम कहते हो वैसा ही करती हूं। देखो, उधर देखो!" वह उसके कंधे पर अपना सिर टिकाये हल्की-हल्की सुखद उष्णता बिखेरनेवाले नीले उक्राइनी आकाश के अनंत विस्तार की ओर, जिसके नीचे उनके चारों ओर के चेरी के पेड़ों की लेस जैसी पत्तियों की झालर लगी थी, आंखें उठाकर कहती रही। "वह दूर टिमटिमाते हुए नन्हे-नन्हे सितारे देख रहे हो? देखो: एक, दो, तीन, चार, पांच हैं... मैं समझती हूं वे फ़रिश्ते होंगे, जो स्वर्ग में अपनी छोटी-छोटी सुंदर कुटियाओं की खिड़कियां खोलकर हमें देख रहे हैं। है न, लेव्को? वे ही हमारी इस दुनिया को देख रहे हैं, है न? ज़रा सोचो, अगर आदमियों के पंख होते, चिड़ियों की तरह, और हम उड़कर वहां जा सकते, बहुत दूर आसमान की ऊंचाई पर... उफ़, बड़ा डर लगता है! एक भी बलूत का पेड़ इतना ऊंचा नहीं है कि सितारों तक पहुंच सके। लेकिन लोग कहते हैं कि एक पेड़ है ऐसा, कहीं किसी दूर देश में, जिसकी सबसे ऊपरवाली डालें स्वर्ग में सरसराती हैं, और भगवान उन्हीं पर चलकर ईस्टर के इतवार से पहलेवाली रात को धरती पर उतरते हैं।"

"नहीं, हान्ना, भगवान के पास एक लंबी-सी सीढ़ी है जो स्वर्ग से पृथ्वी तक चली आती है। ईस्टर के इतवार से पहलेवाली रात को सबसे बड़े फ़रिश्ते यह सीढ़ी लगा देते हैं और जैसे ही भगवान उसके

पहले डंडे पर अपना पांव रखते हैं सारी अपवित्र आत्माएं लुढ़ककर नरक में पहुंच जाती हैं और यही वजह है कि ईसा के पुनरुत्थान के दिन पृथ्वी पर एक भी दुष्ट आत्मा नहीं रह जाती।"

"सुनो, पानी कैसे हिलोरें लेता हुआ चुपचाप बह रहा है, जैसे बच्चा पालने में झूलता है!" मेपिल के गहरे रंग के उदास पेड़ों और निराश भाव से पानी में अपनी जटाएं झुलाते हुए बेदवृक्षों से घिरे तालाब की ओर इशारा करके हान्ना अपनी बात कहती रही। दुर्बल बूढ़े की तरह तालाब ने अंधकारमय और सुदूर आकाश को अपनी ठंडी बांहों में समेट रखा था, और वह सुलगते हुए सितारों पर अपने बर्फ़ीले चुंबनों की बौछार कर रहा था; रात की हवा की हल्की-हल्की सुखद आंच में सितारे मंद ज्योति से इस तरह टिमटिमा रहे थे मानो किसी भी क्षण निशा की जगमगाती हुई देवी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हों। जंगल से लगी हुई पहाड़ी पर लकड़ी की एक पुरानी झोपड़ी बंद किवाड़ों के पीछे सो रही थी; उसकी छत पर काई जमी हुई थी और घास-फूस उगा हुआ था, उसकी खिड़कियों को जंगली सेब के घने पेड़ों ने पूरी तरह ढक रखा था; जंगल अपनी मलिन छाया उस कुटिया पर डाल रहा था जिसकी वजह से वह अंधकारमय और भयावह लगने लगी थी; कुटिया से नीचे पहाड़ी की ढलान पर अख़रोट के पेड़ों का एक झुरमुट था जो नीचे तालाब तक फैला हुआ था।

"मुझे एक बार की बात याद है, बहुत पहले की, जैसे कोई सपना देखा हो," हान्ना ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "जब मैं छोटी-सी थी और ननिहाल में रहती थी, तब मैंने उस पुराने घर के बारे में एक डरावनी कहानी सुनी थी। लेव्को, तुम्हें वह कहानी ज़रूर मालूम होगी, मुझे सुनाओ न! .."

"तुम उसके बारे में परेशान न हो, मेरी जान! बूढ़ी औरतें और बेवक़ूफ़ लोग दुनिया-भर की बकवास करते रहते हैं। तुम बेकार परेशान होगी, तुम्हारे दिल में डर समा जायेगा और तुम्हें नींद नहीं आयेगी।"

"नहीं, बताओ मुझे, बताओ न, मेरे सलोने राजकुमार!" उसने अपना गाल उसके गाल से सटाकर और उसे सीने से लगाकर आग्रह किया। "अच्छा! मैं समझ गयी, तुम मुझसे सचमुच प्यार नहीं करते हो, तुम्हें किसी और से प्यार है। मुझे डर नहीं लगेगा,

मैं आज रात चैन से सोऊंगी। लेकिन अगर तुम मुझे नहीं सुनाओगे तो मुझे बिल्कुल नींद नहीं आयेगी। मैं बेचैन रहूंगी और सोचती रहूंगी ... चलो, सुना भी दो, लेव्को! ..."

"लोग जो कहते हैं वह सच ही होगा कि लड़कियों के अंदर एक शैतान होता है जो उनकी उत्सुकता जगाता रहता है। अच्छी बात है, सुनो। बहुत ज़माने पहले की बात है, मेरी जान, उस घर में एक कज़ाक सोतनिक* रहता था। उस सोतनिक के एक बेटी थी, बहुत सुंदर लड़की जो बर्फ़ जैसी गोरी थी, बिल्कुल तुम्हारे सुंदर मुखड़े जैसी। उस लड़की की मां मर गयी थी और वह सोतनिक दूसरी शादी करने की बात सोच रहा था। 'अच्छा, पापा, यह बताओ जब तुम दूसरी बीवी ले आओगे तब भी तुम मेरे साथ इतना ही अच्छा बर्ताव करोगे?' – 'क्यों नहीं, मेरी बेटी, ज़रूर करूंगा; मैं तुम्हें पहले से भी ज़्यादा चमकीले कुंडल और हार दिया करूंगा!' सोतनिक अपनी नौजवान बीवी को नये घर में ले आया। उसकी नयी बीवी देखने में बड़ी सुंदर थी, उसका रंग गोरा था, उसके गाल गुलाबी थे; लेकिन उसने अपनी सौतेली बेटी को ऐसी भयानक दृष्टि से देखा कि लड़की डर के मारे चीख़ पड़ी; दिन-भर उसकी ग़ुस्सैल सौतेली मां ने लड़की से एक शब्द भी नहीं कहा। रात हुई; सोतनिक अपनी नयी नवेली दुल्हन को लेकर सोने के कमरे में चला गया; सुंदर लड़की भी अपनी कोठरी में जाकर बंद हो गयी। उसके हृदय में पीड़ा थी; वह रोने लगी। अचानक उसने देखा कि एक भयानक काली बिल्ली रेंगती हुई उसकी ओर बढ़ रही है; उसके बालों में आग की लपटों जैसी चमक थी और वह अपने फ़ौलादी नाख़ूनों से फ़र्श को खरोंच रही थी। डर के मारे लड़की कूदकर बेंच पर चढ़ गयी; बिल्ली भी कूदकर उसके पास पहुंच गयी। लड़की उछलकर अलावघर के चबूतरे पर चढ़ गयी – बिल्ली भी उसके पीछे कूदी और अचानक उसकी गर्दन पर झपटकर उसका गला घोंटने लगी। चीख़कर लड़की ने उससे अपनी गर्दन छुड़ायी और उसे ज़मीन पर पटक दिया; वह भयानक जानवर फिर धीरे-धीरे रेंगता हुआ उसकी ओर बढ़ा। लड़की के दिल में डर समा गया।

---

* कज़ाक सेनापति, जिसके आधीन सौ सैनिकों का रिसाला होता है जिसे "सोतन्या" कहते हैं; लेफ़्टिनेंट के बराबर का पद। – सं०

पीछे दीवार पर उसके बाप की तलवार लटकी हुई थी। उसने तलवार लेकर फ़र्श पर झाड़ू की तरह चलायी – बिल्ली का फ़ौलादी नाख़ूनों-वाला एक पंजा कट गया और वह चिचियाती हुई अंधेरे कोने में दुबक गयी। नयी दुल्हन दिन-भर अपने कमरे से बाहर नहीं निकली, दो दिन बाद जाकर वह अपनी बांह में पट्टी बांधे बाहर निकली। बेचारी सौतेली बेटी को अब मालूम हुआ कि उसकी सौतेली मां चुड़ैल थी और उसने उसका ही हाथ काट डाला था। अगले दिन सोतनिक ने अपनी बेटी को हुक्म दिया कि वह नौकर की तरह पानी भरकर लाये, झोपड़ी में झाड़ू लगाये और रहने के कमरे में अपनी सूरत न दिखाये। बेचारी लड़की के लिए यह बड़ा क्रूर आघात था, लेकिन उसके पास कोई दूसरा रास्ता ही नहीं था ; वह अपने बाप की आज्ञाओं का पालन करने लगी। पांचवें दिन सोतनिक ने अपनी बेटी को नंगे पांव घर से निकाल दिया और रास्ते में खाने के लिए उसे रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं दिया। तब आख़िरकार वह लड़की दोनों हाथों से अपना गोरा चेहरा ढककर फूट-फूटकर रोने लगी : 'तुमने ख़ुद अपनी बेटी को मौत के मुंह में ढकेल दिया है, पापा! उस चुड़ैल ने तुम्हारी पापी आत्मा को नष्ट कर दिया है! भगवान तुम्हें क्षमा करे ; लेकिन उसकी यही इच्छा मालूम होती है कि मैं अब और ज़िंदा न रहूं! ..' – और वह देखो, वहां ..." इतना कहकर लेव्को ने मुड़कर हान्ना की ओर देखा और उस घर की ओर इशारा किया। "वहां देखो, घर के पार एक ऊंचा-सा टीला है। उसी जगह से सोतनिक की बेटी तालाब में कूद गयी थी ; उसके बाद से इस दुनिया में किसी ने उसे नहीं देखा ..."

"और वह चुड़ैल ?" हान्ना ने डबडबायी हुई आंखों से विनयपूर्वक उसकी ओर देखकर चिंतित स्वर में पूछा।

"वह चुड़ैल ? बुढ़ियों की कहानी में इस तरह बयान किया गया है। उस दिन के बाद से डूबनेवाली सारी औरतें पूरे चांद की रात को उस घर के बाग़ में जमा होती हैं और चांदनी में नहाती हैं ; सोतनिक की बेटी उनकी अगुआ बन गयी। एक रात उसे अपनी सौतेली मां तालाब के पास खड़ी दिखायी दी ; वह उसके ऊपर झपटी और चीख़ मारकर उसे पानी में खींच ले गयी। लेकिन चुड़ैल ने उन सबको चकमा दे दिया : पानी के नीचे पहुंचकर उसने एक डूबी हुई औरत का रूप धारण कर लिया और इस भेस में वे औरतें हरे सरकंडे के कोड़ों से उसकी

जो पिटाई करना चाहती थीं उससे वह बच गयी। इन बुढ़ियों को भी कैसी-कैसी बातें सूझती हैं! लोग यह भी कहते हैं कि वह डूबी हुई लड़की रोज़ रात को अपनी सारी औरतों को जमा करती है और यह पता लगाने के लिए उनके चेहरों को घूर-घूरकर देखती है कि उनमें से वह चुड़ैल कौन-सी है; लेकिन अभी तक वह उसका पता नहीं लगा पायी है। और अगर कोई ज़िंदा आदमी उसके चंगुल में फंस जाता है तो वह फ़ौरन उसे डूबो देने की धमकी देकर यह अटकल लगाने के लिए मजबूर करती है कि उनमें से वह चुड़ैल कौन-सी है। तो, मेरी प्यारी हान्ना, बूढ़े लोग यही सब बकवास करते रहते हैं!.. उस घर का मौजूदा मालिक वहां शराब की भट्ठी लगाना चाहता है और उसे चलाने के लिए उसने एक शराब बनानेवाले को ख़ास तौर पर वहां भेजा भी है... रुको, मुझे कुछ आवाज़ें सुनायी दे रही हैं। छोकरे गा-बजाकर लौट रहे हैं। अच्छा, हान्ना, मैं चलता हूं! सुख की नींद सोना – बुढ़ियों की इन कहानियों को बिल्कुल भूल जाना!"

यह कहकर उसने कसकर उसे सीने से लगाया, उसे प्यार किया और चला गया।

"अलविदा, लेव्को!" हान्ना ने अपनी विचारमग्न आंखें अंधेरे जंगल की ओर फेरते हुए जवाब दिया।

उसी क्षण चांद के बड़े-से दमकते हुए गोले ने क्षितिज के पीछे से बड़ी शान से उभरना शुरू किया। उसका आधा हिस्सा अभी तक छिपा हुआ था लेकिन उसकी जादू-भरी रोशनी सारी दुनिया में फैल गयी थी। तालाब ज़िंदा होकर झिलमिला रहा था। अंधकारमय पृष्ठ-भूमि पर पेड़ों की परछाइयां साफ़ पहचानी जा सकती थीं।

"अलविदा, हान्ना!" उसे अपने पीछे से किसी की आवाज़ सुनायी दी और इन शब्दों के साथ ही किसी ने उसे चूम लिया।

"तुम वापस आ गये!" उसने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा; लेकिन अपने सामने एक बिल्कुल अजनबी को देखकर उसने फिर मुंह फेर लिया।

"अलविदा, हान्ना!" उसे फिर सुनायी दिया, और किसी ने उसके गाल पर एक और चुंबन जड़ दिया।

"एक और ढीठ बदमाश!" उसने झल्लाकर कहा।

"अलविदा, मेरी प्यारी हान्ना!"

"अब एक और!"

"अलविदा! अलविदा! अलविदा, हान्ना!" और चारों ओर से उस पर चुंबनों की बौछार होने लगी।

"यह तो पूरा गरोह है!" हान्ना ने उसे चूमने को बेताब नौजवानों की भीड़ के बीच से झपटकर बाहर निकलते हुए चिल्लाकर कहा। "ये लोग चूमते-चूमते कभी थकते भी नहीं? हे भगवान, इस तरह तो जल्दी ही मैं सड़क पर मुंह दिखाने लायक़ भी नहीं रह जाऊंगी!"

यह कहकर उसने दरवाज़ा धड़ से बंद कर लिया और लोहे की कुंडी सरकाने की आवाज़ के अलावा कुछ भी सुनायी नहीं दिया।

२

मुखिया

आप उक्राइना की रात को जानते हैं? नहीं, आप उक्राइना की रात को नहीं जानते! उसे ध्यान से देखिये। आकाश के बीचोंबीच चांद झांक रहा है। व्योम का अनंत विस्तार और भी फैल गया है और उसके आयाम पहले से भी अधिक असीम हो गये हैं। वह झिलमिला रहा है और सांस ले रहा है। नीचे धरती रुपहली रोशनी में सजी हुई है; स्वच्छ निर्मल वायु शीतल और मादक है, मिठास से भरी हुई और सुगंध के सागर में नहायी हुई। कैसी दिव्य रात है! मंत्रमुग्ध कर देनेवाली रात! रात के अंधेरे से भरे हुए जंगल निश्चल, सचेतन खड़े हुए हैं और अपने सामने विशाल छायाएं डाल रहे हैं। तालाब चुप और शांत हैं; बाग़ों के चारों ओर की काही रंग की चारदीवारियां उदास भाव से पानी की ठंडक और अंधेरे को घेर लेती हैं। बर्ड-चेरी और चेरी के जंगली पेड़ों के अछूते झुरमुट बीच-बीच में पत्तियों की मरमर-ध्वनि के साथ घबराकर अपनी जड़ें चश्मे के बर्फ़ीले पानी में डुबो देते हैं, मानो रात की उस ख़ूबसूरत हवा से नाराज़ हों जो चुपके से रेंगकर उन पर चढ़ जाती है और उन्हें चूम लेती है। समस्त दृश्यावली सोयी हुई है। ऊपर आसमान सांस ले रहा है, हर वस्तु भव्य तथा शांतचित्त है। मन में एक उत्कृष्ट भावना उमड़ती है और उसकी गहराइयों में से कितनी ही झिलमिलाती

हुई कल्पनाएं उभरती हैं। दिव्य रात! मंत्रमुग्ध कर देनेवाली रात! सहसा हर चीज़ सजीव हो उठती है: जंगल, तालाब और स्तेपी। उक्राइनी बुलबुल का मधुर संगीत कानों में रस घोलता है और आकाश के बीच में चांद ऐसा ध्यान में डूबा हुआ ठहर जाता है मानो वह भी उसका गीत सुन रहा हो... ऊंचाई पर बसा हुआ गांव ऐसे सो रहा है जैसे किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। झोपड़ियों के झुरमुट चांद की रोशनी में चांदी की तरह चमक रहे हैं; उनकी नीची-नीची दीवारों की सफ़ेद रूपरेखा चारों ओर के अंधकार की पृष्ठभूमि पर और भी उभरकर सामने आ जाती है। गीत शांत हो गये हैं। चारों ओर सन्नाटा है। सभी धर्मभीरु नेक ईसाई गहरी नींद सो रहे हैं। कहीं-कहीं रोशनी की पतली-सी धज्जी झरोखे में से झांक लेती है। एक-दो झोपड़ियों के सामनेवाली खुली जगह में कोई मंदगामी विलंबी परिवार रात गये अपना भोजन समाप्त कर रहा है।

"अरे नहीं, ऐसे नहीं नाचा जाता है होपक नाच! उन लोगों की ताल ही ठीक नहीं पड़ रही थी! वह उसका भाई क्या कह रहा था?.. इस तरह है उसकी ताल: ता थै-या! ता थै-या! ता, ता, ता!" यह बातचीत नशे में चूर एक बूढ़ा किसान सड़क पर नाचते हुए अपने आप से कर रहा था। "क़सम खाकर कहता हूं, यह होपक नाचने का कोई तरीक़ा नहीं है! भगवान क़सम, ऐसे नहीं! मैं झूठ क्यों बोलूं? ऐसे बिल्कुल नहीं! आ जाओ! ता थै-या! ता थै-या! ता, ता, ता!"

"इसका तो दिमाग़ उतर गया पटरी पर से! अगर कोई नौजवान आदमी होता तो समझ में भी आने की बात थी, लेकिन देखो तो इस खूसट बूढ़े को, आधी रात को बीच सड़क पर बेवक़ूफ़ों की तरह नाच रहा है!" उसी की उम्र की एक औरत ने, जो हाथ में पयाल का गट्ठा लिये चली जा रही थी, चिल्लाकर कहा। "अब घर वापस जाओ! सोने का वक़्त हो गया!"

"जाता हूं!" किसान ने रुककर कहा। "जाता हूं। और मुखिया की मुझे परवाह ही क्या है। यह क्यों समझता है वह, उसके बाप के सिर पर भूत चढ़े, कि वह मुखिया है तो वह कड़ाके की सर्दी में लोगों को ठंडे पानी से नहला सकता है और ऐंठता फिर सकता है? बड़ा आया मुखिया कहीं का! मैं अपना मुखिया ख़ुद बनूंगा, मुझे माफ़

करो! हां, भगवान को साक्षी जानकर कहता हूं, मैं ख़ुद अपना मुखिया हूं! यही मेरा कहना है, और वह..." वह सबसे पास की झोपड़ी के दरवाज़े की ओर जाते हुए कहता रहा और खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। दरवाज़े का हैंडिल खोजने की कोशिश में वह कांच को खुरचता रहा। "ऐ, सुनती है, दरवाज़ा खोल दे! जल्दी कर, सुनती है कि नहीं, खोल दे! इस बूढ़े कज़ाक को नींद लगी है!"

"कहां जा रहे हो, कलेनिक? वह तुम्हारा घर नहीं है!" गा-बजाकर घर लौटती हुई लड़कियों की एक टोली ने ठहाका मारकर उसके पीछे से पुकारकर कहा। "घर का रास्ता दिखा दें तुम्हें?"

"हां, मुझे रास्ता दिखा दो, छबीली सलोनियो!"

"छबीली सलोनियो? सुनती हो इसकी बातें?" उनमें से एक ने दोहराया, "बड़ा भला आदमी है, हमारा कलेनिक। इसके बदले तो इसका कुछ उपकार करना ही पड़ेगा... लेकिन नहीं, पहले एक नाच दिखा दो!"

"नाच?.. अरे, नटखट लड़कियो!" हंसकर उनकी ओर अपनी उंगली हिलाते हुए कलेनिक ने धीरे-धीरे कहा। "पहले," वह पीछे की ओर झोंका खाकर बोला क्योंकि उसकी टांगें इतनी बुरी तरह लड़खड़ा रही थीं कि उससे एक जगह खड़ा नहीं हुआ जा रहा था, "पहले एक चुम्मी देने के बारे में क्या ख़्याल है, क्यों? मैं तुम सबका प्यार लूंगा, एक-एक का!.." वह लड़खड़ाकर उनकी ओर लपका।

लड़कियां चीख़ने लगीं और तितर-बितर हो गयीं; लेकिन जब उन्होंने देखा कि कलेनिक के पांव ठीक से उसका साथ नहीं दे रहे हैं तो उनकी हिम्मत बढ़ी और वे कुलेलें भरती हुई सड़क के उस पार चली गयीं।

"वह रहा तुम्हारा घर!" उन्होंने भागते-भागते एक घर की तरफ़ इशारा करके पुकारकर कहा, जो बाक़ी सब घरों से बड़ा था और गांव के मुखिया का था। कलेनिक चुपचाप उनकी बात मानकर उसी ओर चल पड़ा और लगातार मुखिया को बुरा-भला कहता रहा।

लेकिन आख़िर यह मुखिया है कौन जिसे लोग इतनी गालियां देते हैं? ओहो, यह मुखिया गांव का बहुत बड़ा आदमी है। जितनी देर कलेनिक अपना रास्ता तै कर रहा है उतनी देर में हम कुछ शब्द मुखिया के बारे में बता दें। सारा गांव उसे देखते ही अपनी टोपी

14–1333

उतार लेता है और जवान से जवान लड़कियां भी कहती हैं: "सलाम, चौधरी!" हर नौजवान मुखिया बनने के सपने देखता है! मुखिया को पूरी छूट होती है कि गांव में जिसकी जितनी नसवार चाहे ले ले; हट्टे-कट्टे किसान बड़े आदर के भाव से हाथ में अपनी टोपी लिये खड़े रहते हैं और मुखिया अपनी मोटी-मोटी भद्दी उंगलियों से रंग-बिरंगे चित्रों से सजी हुई उनकी डिबियों में से नसवार निकालता रहता है। गांव की पंचायत में, या ग्राम-सभा में, इस बात के बावजूद कि उसकी सत्ता दो-चार वोटों के बल पर ही है, मुखिया का पलड़ा हमेशा भारी रहता है और वह जिसे भी चाहता है उसे सड़क चौरस करने या खाइयां खोदने जैसे कामों पर लगा देता है। मुखिया की सूरत हमेशा मनहूस लगती है, देखने में वह हर दम झल्लाया रहता है, और उसे ज़्यादा बोलना पसंद नहीं है। बहुत दिन हुए, बहुत पहले की बात है, जब हमारी महारानी कैथरीन, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे, क्रीमिया की यात्रा* पर गयी थीं, तो उसे उनके मार्गदर्शक का काम करने के लिए चुना गया था; उसने पूरे दो दिन तक अपना यह काम किया था और उसे शाही बग्घी पर महारानी के कोचवान के पास बैठने का भी सुअवसर मिला था। तब से मुखिया की आदत पड़ गयी थी कि वह विचारमग्न होकर, रोबदार सूरत बनाये, अपनी लंबी-लंबी नीचे ऐंठी हुई नुकीली मूंछों पर ताव देता हुआ सिर झुकाकर चलता था, और भवों के नीचे से चारों ओर बाज़ जैसी दृष्टि से देखता जाता था। और तभी से, चाहे जिस विषय पर चर्चा क्यों न हो रही हो, मुखिया इस बात का ज़िक्र करने का कोई मौक़ा न चूकता कि किस तरह उसने महारानी को यात्रा करायी थी और शाही बग्घी पर कोचवान के पास बैठा था। मुखिया कभी-कभी यह ढोंग करने की कोशिश करता है कि वह बहरा है, ख़ास तौर पर उस वक़्त जब वह कोई ऐसी बात सुनता है जो उसके कानों को अच्छी नहीं लगती। मुखिया बहुत भड़कीले कपड़े पहनने का शौक़ीन नहीं है; वह हमेशा घर के बुने हुए कपड़े का सादा-सा काला कोट पहनता है जिस पर वह एक रंगीन ऊनी कमरबंद बांधे रहता है; किसी को याद नहीं पड़ता कि उसने उसे

---

* संकेत कैथरीन महान (१७६२–१७९६) की क्रीमिया की यात्रा की ओर है, जिस पर रूस ने १७८३ में अधिकार कर लिया था। – सं०

किसी दूसरे लिबास में देखा हो, अलावा उस वक़्त के जब महारानी की सवारी क्रीमिया जाते हुए उधर से गुज़री थी और मुखिया ने कज़ाकों जैसा नीला जुपान* पहना था। लेकिन मुझे तो इसमें भी शक है कि गांव में कोई आदमी ऐसा बचा होगा जिसे उस अवसर की याद हो, और वह उस जुपान को संदूक़ में ताला बंद करके रखता है। मुखिया की बीवी मर गयी है लेकिन उसकी साली उसके घर में रहती है, उसके लिए खाना पकाती है, बेंचें साफ़ करती है, दीवारों की लिपाई-पुताई करती है, उसकी क़मीज़ों के लिए सूत कातती है और गृहस्थी की देखभाल करती है। गांव में जिन लोगों की ज़बान चलती है वे तो यहां तक बताते हैं कि वह उसकी कोई रिश्तेदार है ही नहीं ; लेकिन, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, मुखिया की बुराई चाहनेवाले बहुत-से लोग हैं, जो उसके बारे में तरह-तरह की बुरी बातें फैलाकर ख़ुश होते हैं। मुमकिन है इस अफ़वाह की वजह यह हो कि साली को यह बात कभी अच्छी नहीं लगती है कि मुखिया खेतों में उस वक़्त जाता है जब लड़कियां वहां दंवरी के लिए जाती हैं, या वह हर उस कज़ाक के यहां जाता है जिसके जवान बेटी हो। मुखिया के एक ही आंख है ; लेकिन उसकी यह इकलौती आंख बला की तेज़ है और मील-भर दूर से सुंदर लड़की को देख लेती है। लेकिन पहले से इस बात का पक्का यक़ीन किये बिना कि उसकी साली देख तो नहीं रही है वह किसी सुंदर मुखड़े पर अपनी नज़र जमाता नहीं। तो हमने आपको मुखिया के बारे में जानने लायक़ सारी ज़रूरी बातें बता दीं ; इस बीच नशे में चूर कलेनिक अभी आधी दूर ही पहुंचा है और उसे मुखिया को चुन-चुनकर वे सारी गालियां देने का मौक़ा मिलेगा जो उसकी आलसी और लद्धड़ ज़बान पर आ सकें।

३

अप्रत्याशित प्रतिद्वंद्वी। षड्यंत्र

"नहीं, यारो, नहीं, मैं इस चक्कर में नहीं पड़ता! बस, बहुत हो चुका! तुम लोग अपनी इन शरारतों से थक नहीं जाते? यों भी

* उक्राइनी और पोलिस्तानी मर्दों का छोटे कफ़्तान जैसा एक पहनावा। – सं०

सारा गांव समझने लगा है कि हम बड़े उपद्रवी हैं। चलो, सोने का वक़्त हो गया है!" यह था अपने ऊधमी दोस्तों को लेव्को का जवाब जब उन्होंने अपनी नयी शरारतों के लिए उसे भी अपने साथ ले चलने की कोशिश की। "अच्छा, मैं तो चला, दोस्तो! तुम सब लोगों को सलाम!" उसने पुकारकर कहा और तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ सड़क पर चल दिया।

"क्या मेरी मृगनयनी हान्ना इस वक़्त सो रही होगी?" चेरी के पेड़ोंवाले घर के पास पहुंचकर उसने सोचा। चारों ओर की निस्तब्धता में उसे कुछ आवाज़ों की धीमी-धीमी मरमर-ध्वनि सुनायी दी। लेव्को ठिठक गया। उसे पेड़ों के बीच से एक सफ़ेद ब्लाउज़ साफ़ दिखायी दे रहा था... "क्या हो रहा है?" दबे पांव कुछ और पास जाकर एक पेड़ के पीछे छिपकर वह सोचने लगा। उसके सामने लड़की के चेहरे पर चांदनी चमक रही थी... हान्ना! लेकिन यह लंबा-सा आदमी कौन था जो उसकी ओर पीठ किये खड़ा था? वह उसे झांककर देखने का व्यर्थ प्रयास करने लगा: परछाइयों के बीच वह आदमी बिल्कुल पहचाना नहीं जा रहा था। सिर्फ़ सामने से उस पर कुछ रोशनी पड़ रही थी; लेकिन ज़रा-सा भी आगे क़दम बढ़ाने पर लेव्को देखा जाता। चुपचाप एक पेड़ का सहारा लेकर उसने जहां वह था वहीं रुके रहने का फ़ैसला किया। उसने साफ़ सुना कि लड़की ने उसका नाम लिया।

"लेव्को? लेव्को तो अभी दुध-मुंहा है!" उस लंबे आदमी ने भर्रायी हुई दबी आवाज़ में कहा। "अगर मैंने कभी उसे तुम्हारे साथ पकड़ लिया तो मैं उसकी माथे की लट ऐसी खींचूंगा कि याद करेगा!"

"कुछ पता तो चले कि आख़िर यह सूअर है कौन जो माथे की लट खींचना चाहता है!" लेव्को हर शब्द सुनने की उत्सुकता में अपनी गर्दन सारस की तरह आगे बढ़ाकर मुंह ही मुंह में बड़बड़ाया। लेकिन वह अजनबी इतने चुपके-चुपके बातें करता रहा कि उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया।

"तुम ऐसी बात कैसे कह सकते हो!" उसकी बात पूरी हो जाने पर हान्ना ने ग़ुस्से से कहा। "तुम झूठ बोल रहे हो; तुम मुझे धोखा दे रहे हो; तुम मुझसे प्यार नहीं करते; और मैं कभी इस बात पर यक़ीन नहीं करूंगी कि तुम मुझसे प्यार करते हो!"

"मैं जानता हूं," लंबा आदमी कहता रहा, "लेव्को ने तुमसे दुनिया-भर की ख़ुराफ़ात बातें बतायी हैं और तुम्हारा दिमाग़ फेर दिया

है," (यहां पर लेव्को को ऐसा लगा कि उसने वह आवाज़ पहले कहीं सुनी है)। "लेकिन मैं भी लेव्को को बता दूंगा कि मैं किस मिट्टी का बना हूं!" वह अजनबी कहता रहा। "वह समझता है कि मैं उसके हथकंडे जानता नहीं। मैं उस बदमाश को दिखा दूंगा कि मैं अपने घूंसों से क्या काम ले सकता हूं!"

उसकी यह आख़िरी बात सुनकर लेव्को अपने ग़ुस्से पर क़ाबू न रख सका। तीन क़दम आगे बढ़कर उसने अपना मुक्का पीछे की ओर ताना, अजनबी को एक ऐसा घूंसा जड़ देने की तैयारी में जो उसके तगड़े डीलडौल के बावजूद उसे ज़मीन चटा देता; लेकिन उसी क्षण रोशनी की एक किरन उस आदमी के चेहरे पर पड़ी और लेव्को ख़ुद अपने बाप को सामने खड़ा पाकर हक्का-बक्का रह गया। उसने अपना आश्चर्य बस इस तरह व्यक्त किया कि वह अनायास ही सिर हिलाकर और सीटी बजाने की हल्की-सी आवाज़ निकालकर रह गया। उनके पास ही कुछ शोर सुनायी दिया; हान्ना तेज़ी से झपटती हुई अपने घर में वापस चली गयी और अंदर जाकर उसने दरवाज़ा बंद कर लिया।

"अलविदा, हान्ना!" उसी क्षण लड़कों में से एक ने चुपके से आगे बढ़कर मुखिया को सीने से लगा लिया और ऊंचे स्वर में कहा; मुखिया की कड़े बालोंवाली मूंछों का स्पर्श होते ही वह सहमकर पीछे हट गया।

"अलविदा, मेरी सुंदरी!" एक दूसरे लड़के ने आवाज़ दी और मुखिया का ज़ोर का घूंसा खाकर वह लड़खड़ाता हुआ दूर जा गिरा।

"अलविदा, अलविदा, हान्ना!" कई लड़के एक साथ चिल्लाये और मुखिया की गर्दन में बांहें डालकर लटक गये।

"भागो यहां से, आवारा बदमाश कहीं के!" मुखिया उन पर हाथ चलाकर और पांव पटककर ज़ोर से चिल्लाया। "मैं तुम लोगों की हान्ना कब से बन गया? जाओ, तुम लोग भी जाकर अपने-अपने बाप की तरह फांसी चढ़ जाओ, शैतान की औलादो! देखो तो, ऐसे टूट पड़े जैसे शीरे पर मक्खियां टूट पड़ती हैं... चलो, भागो यहां से! नहीं तो मैं अभी तुम्हें हान्ना बना दूंगा!.."

"मुखिया! मुखिया! यह तो मुखिया है!" लड़के चिल्लाते हुए जल्दी-जल्दी तितर-बितर हो गये।

"अच्छा, पापा!" इस रहस्योद्‌घाटन के आघात का प्रभाव दूर होने पर लेव्को ने मुखिया को लंबे-लंबे डग भरते हुए और चारों ओर गालियों की बौछार करते हुए जाते देखकर कहा। "तो ये हरकतें हैं तुम्हारी! अच्छा चक्कर चला रखा है! और मैं यह समझने के लिए सिर खपाता रहा कि जब भी मैं शादी की बात करता हूं तो वह मेरी बात अनसुनी क्यों कर देता है। ठहर जा, खूसट बूढ़े, मैं तुझे नौजवान छोकरियों की खिड़कियों के सामने मंडलाने का मज़ा चखाता हूं, मैं बताता हूं तुझे कि दूसरों की लड़कियां उड़ा ले जाने का क्या मतलब होता है! सुनते हो, यारो! यहां आओ! इधर आओ!" उसने हाथ हिलाकर अपने साथियों को पुकारा, जो फिर गरोहबंद हो गये थे। "यहां तो आओ! मैंने ही तुमसे जाकर सो जाने को कहा था, लेकिन अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है और मैं तुम लोगों के साथ चलकर रात-भर हंगामा मचाने को तैयार हूं।"

"यह हुई बात!" चौड़े कंधोंवाले एक तगड़े-से लड़के ने कहा, जो आम तौर पर गांव का सबसे बड़ा बांका-छैला समझा जाता था। "मैं समझता हूं कि जब तक जमकर धूम न मचायी जाये और कुछ असली हंगामे न किये जायें तब तक बेकार रात बर्बाद होगी। ऐसा लगता है जैसे किसी चीज़ की कमी रह गयी है। जैसे हैट या पाइप खो गया हो: लगता ही नहीं कि असली कज़ाक हो।"

"आज रात मुखिया की अच्छी तरह ख़बर लेने के बारे में क्या ख़्याल है?"

"मुखिया की?"

"मैं कहता हूं, आख़िर वह अपने आपको समझता क्या है? हमारे ऊपर ऐसे हुक्म चलाता है जैसे कहीं का सुलतान हो। जिस तरह हम लोगों को हांकता रहता है वही क्या कम था कि अब हमारी लड़कियां भी हमसे छीनने की कोशिश करने लगा। मुझसे पूछो तो गांव में एक भी ख़ूबसूरत लड़की ऐसी नहीं है जिस पर मुखिया ने डोरे न डाले हों।"

"हां, यह तो सच है!" सब लड़कों ने एक स्वर से कहा।

"भला हम क्यों उसके गुलामों जैसे हैं? क्या हम लोग उससे किसी बात में कम हैं? भगवान की कृपा से हम सभी आज़ाद कज़ाक हैं! तो आओ, यारो, उसे दिखा दें कि हम आज़ाद कज़ाक हैं!"

"चलो, दिखा दें!" दूसरों ने हाथों हाथ यह नारा उठा लिया। "और मुखिया की ख़बर लेते वक़्त मुंशीजी को भी उसके साथ लपेट में ले लिया जाये!"

"मुंशीजी को भी धरेंगे, फ़िकर न करो! है यह कि मेरे पास मुखिया के बारे में एक बहुत बढ़िया बना-बनाया गाना है। आओ, मैं तुम लोगों को सिखाये देता हूं," लेव्को ने बंदूरा छेड़ते हुए अपनी बात जारी रखी। "और सुनो, हम सब लोग भूतों का भेस बनाकर जायेंगे!"

"ज़रा संभलके, लोगो, कज़ाक आते हैं!" तगड़े-से लड़के ने अपने पांव पटककर तालियां बजाते हुए कहा। "कैसा अच्छा लगता है! आज़ादी! खुलकर धूम मचाने में कैसा मज़ा आता है – जैसा पुराने ज़माने में होता होगा। ऐसा लगता है कि हम हवा की तरह आज़ाद हैं; और हमारी आत्मा आसमान पर पहुंच गयी है। चलो, दोस्तो! देखें चलकर कहां है वह! .."

हुल्लड़ मचानेवालों का गरोह सड़क पर कूदता-फांदता चल पड़ा। धर्मभीरु बूढ़ी औरतों ने, जिनकी आंख यह शोर सुनकर खुल गयी थी, अपनी खिड़कियां खोलीं और नींद में झोंके खाते हुए अपने सीने पर सलीब का निशान बनाकर कहा, "आज रात लड़के सचमुच मस्ती में हैं!"

४

लड़के मस्ती में

सड़क के छोर पर सिर्फ़ एक घर में बत्तियां जल रही थीं। यही मुखिया का घर था। मुखिया खाना तो कब का खा चुका था और बेशक वह बहुत पहले सो गया होता, लेकिन उसके यहां एक मेहमान आया हुआ था, एक शराब बनानेवाला; उसे एक ज़मींदार ने आज़ाद कज़ाकों के खेतों के बीच अपने ज़मीन के छोटे-से टुकड़े पर शराब की भट्ठी लगाने के लिए भेजा था। मेहमान देव-प्रतिमाओं के नीचे सम्मान के स्थान पर बैठा था। वह छोटे क़द का, मोटा-सा आदमी था, जिसकी छोटी-छोटी आंखों के चारों ओर लगातार मुस्कराते रहने की वजह से झुर्रियां

पड़ी रहती थीं ; अपने छोटे-से पाइप का कश लगाकर उसे जो ख़ुशी होती थी वह उसकी आंखों में झलकती हुई मालूम होती थी ; जब पाइप में से राख निकलने लगती थी तो बार-बार उसे पाइप पीना बंद करके थूकना पड़ता था और पाइप में तंबाकू की राख को थपथपाकर दबाना पड़ता था... पाइप के धुएं के बादल जल्दी ही उड़ने लगते थे और कुछ-कुछ नीला-सा कुहासा उसके चारों ओर छा जाता था। वह आदमी बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे शराब की भट्ठी की मोटी-सी चिमनी ने छत पर अड्डा जमाये-जमाये थककर अपनी टांगें सीधी करने का फ़ैसला किया हो और आकर मुखिया की मेज़ पर बैठ गयी हो। शराब बनानेवाले के ऊपरवाले होंठ पर छोटी-सी घनी मूंछ उगी हुई थी, लेकिन पाइप के घने धुएं के पार वह इतनी धुंधली-धुंधली दिखायी देती थी कि मूंछ के बजाय ऐसा लगता था कि शराब बनानेवाले ने बखार की बिल्ली की इजारेदारी में दख़ल देकर एक चूहा पकड़ लिया था जिसे वह अपने मुंह में दबाये हुए था। घर के मालिक की हैसियत से मुखिया सिर्फ़ क़मीज़ और लिनेन का पतलून पहने बैठा था। उसकी बाज़ जैसी आंख डूबते सूरज की तरह झुकने और मद्धिम पड़ने लगी थी। गांव का एक पुलिसवाला, जो मुखिया के गरोह का आदमी था, मेज़ के सिरे पर बैठा पाइप पी रहा था ; अपने मेज़बान का उचित सम्मान करने के लिए उसने पेटीदार लंबा कोट पहन रखा था।

"क्या ख़्याल है," मुखिया ने शराब बनानेवाले की ओर मुड़कर और जम्हाई लेने के लिए खुले हुए अपने मुंह के सामने सलीब का निशान बनाते हुए पूछा, "शराब की भट्ठी कब तक बनकर तैयार हो जायेगी ?"

"भगवान ने चाहा तो इस पतझड़ तक शराब खिंचनी शुरू हो जायेगी। मैं अपनी आख़िरी दमड़ी तक दांव पर लगाने को तैयार हूं कि इंटरसीज़न का त्योहार आने पर, चौधरी, तुम गांव की बड़ी सड़क पर जलेबी बनाते हुए टेढ़े-टेढ़े चल रहे होगे।"

यह वाक्य बोलते समय शराब बनानेवाले की छोटी-छोटी आंखें कान तक फैली हुई झुर्रियों में खोकर रह गयीं ; उसका सारा शरीर मस्ती-भरी हंसी से हिल उठा और एक क्षण के लिए पाइप पर उसके चुलबुले होंठों की पकड़ ढीली पड़ गयी।

"हम मनाते हैं कि ऐसा ही हो," मुखिया ने कहा और उसके

चेहरे पर मुस्कराहट-सी दौड़ गयी। "आजकल, भगवान की कृपा से, आस-पास तो शराब की भट्ठियां कम ही हैं। लेकिन मुझे याद है कि पुराने ज़माने में जब मैं महारानी की शाही सवारी के साथ पेर्‌यास्लाव्लवाली सड़क से गया था, तब बेज़बोरोद्को* भी, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे ..."

"कैसी बातें करते हो, चौधरी, तुम्हारी याद को क्या हो गया है! उन दिनों तो क्रेमेनचुग से रोमनी तक शराब की दो भट्ठियां भी नहीं थीं। लेकिन अब ... कुछ सुना, उन कमबख़्त जर्मनों ने क्या तरकीब सोची है? कहते हैं कि जल्दी ही वह दिन आनेवाला है जब शराब लकड़ी की आंच पर नहीं खींची जायेगी, जैसा कि सभी भले ईसाई अब तक करते आये हैं, बल्कि उसके लिए कोई शैतानी भाप इस्तेमाल की जायेगी।" यह कहकर शराब बनानेवाला विचारमग्न होकर मेज़ को और उस पर रखे हुए अपने हाथों को देखने लगा। "भगवान ही जाने भाप से वे लोग कैसे यह काम करते हैं!"

"भगवान क़सम, ये जर्मन भी निरे काठ के उल्लू हैं!" मुखिया ने कहा। "उन सबकी तो डंडे से ख़बर ली जानी चाहिये, कुत्ते कहीं के! भला आज तक किसी ने सुना है कि कोई चीज़ भाप से उबाली जाती हो?!"

"मगर यह तो बताओ, भैया," मुखिया की साली ने, जो अलाव-घर के पासवाली बेंच पर टांगें मोड़े बैठी थी, पूछा, "कब तक अपनी घरवाली को लाये बिना तुम यहां ऐसे ही रहोगे?"

"घरवाली का यहां क्या करूंगा? अगर उसकी शक्ल-सूरत होती भी तो बात दूसरी थी।"

"क्या वह सुंदर नहीं?" मुखिया ने उस पर बाज़ जैसी नज़र जमाकर पूछा।

"ऐसी सुन्दर कि क्या कहा जाये! वह बिल्कुल चुड़ैल है, और उसके थोबड़े पर इतनी झुर्रियां पड़ी हुई हैं, जैसे ख़ाली बटुआ हो।" शराब बनानेवाले का छोटा-सा शरीर ज़ोर के ठहाके से हिलने लगा।

---

* बेज़बोरोद्को, अलेक्सांद्र अंद्रेयेविच (१७४७–१७९९) – १७७५ से कैथरीन महान के सचिव; विदेश मंत्री की हैसियत से वह महारानी की क्रीमिया-यात्रा पर उनके साथ गये थे। – सं०

उसी वक़्त किसी के दरवाज़े को खुरचने जैसी आवाज़ हुई; दरवाज़ा खुला और एक किसान अपनी टोपी उतारे बिना चौखट पार करके अंदर आया। वह कमरे के बीच में आकर खड़ा हो गया; वह विचारों में खोया हुआ लग रहा था, उसका मुंह खुला हुआ था, जबड़े नीचे लटके हुए थे और आंखें छत को घूर रही थीं। यह कोई और नहीं – हमारा वही पुराना दोस्त कलेनिक था।

"तो आख़िरकार मैं घर पहुंच ही गया!" उसने दरवाज़े के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठते हुए कमरे में मौजूद दूसरे लोगों की ओर कोई ध्यान दिये बिना कहा। "उफ़्फ़ोह, उस चमरौधे खूसट शैतान ने सचमुच सड़क को कितना लंबा फैला दिया है! मीलों तक चली गयी है, लगता ही नहीं है कि कभी ख़त्म भी होगी! मेरी बूढ़ी टांगें ऐसी दुख रही हैं जैसे किसी ने तोड़ दिया हो उन्हें। अरी, भलीमानस, ज़रा वह कोट लाकर यहां मेरे लेटने के लिए बिछा दे। मैं वहां अलावगार के चबूतरे पर तेरे पास नहीं आनेवाला, इस फेर में न रहना; टांगों के मारे मेरी जान निकली जा रही है! ला, उठा दे, वहां कोने में पड़ा है; तनिक ध्यान रखना, तंबाकू की हंडिया न उलट देना कहीं। अच्छा, तू रहने दे, रहने दे! आज तूने शायद पी रखी है... जाने दे, मैं आप ही उठाये लाता हूं।"

कलेनिक ने उठने की कोशिश की लेकिन किसी अदम्य शक्ति ने उसे बेंच से जकड़े रखा।

"यह भी अच्छी रही!" मुखिया बोला। "दूसरे के घर में घुसकर उसे अपनी बपौती बना लिया! चल, निकल यहां से, भाग जा!.."

"रहने दो, चौधरी, आराम करने दो उसे!" शराब बनानेवाले ने मुखिया को रोकते हुए कहा। "बहुत काम का आदमी है; इसके जैसे कुछ और लोग आस-पास हों तो हमारा कारोबार चमक उठेगा..."

लेकिन उसने ये शब्द मानवीय दया-भाव से प्रेरित होकर नहीं कहे थे। शराब बनानेवाला अंधविश्वासी आदमी था, और वह समझता था कि जो आदमी तुम्हारे घर आकर बैठ चुका हो उसे खदेड़कर निकाल देना अपनी तबाही बुलाना है।

"बुढ़ापा भी कैसे चुपके-चुपके आकर धर दबोचता है!.." कलेनिक बेंच पर लेटते हुए बड़बड़ाया। "अगर मैं पिये होता तब भी कोई बात थी, लेकिन इस वक़्त तो मैं बिल्कुल नशे में नहीं हूं। भगवान क़सम,

मैं नशे में नहीं! मैं भला झूठ क्यों बोलने लगा? ख़ुद मुखिया के सामने मैं क़सम खाने को तैयार हूं। मैं कोई मुखिया से डरता हूं? मैं तो यही मनाता हूं कि वह मर जाये, कुत्ते का पिल्ला! मैं थूकता हूं उस पर! भगवान करे, वह गाड़ी के नीचे कुचला जाये, काना दज्जाल! वह आख़िर समझता क्या है कि वह क्या कर रहा है, पाले में ठिठुरते हुए लोगों पर पानी डाल रहा है..."

"हुंह! सूअर को घर में घुसने दो तो वह सिर पर चढ़ आता है," मुखिया ने ग़ुस्से से उठकर खड़े होते हुए कहा; लेकिन उसी क्षण एक बड़ा-सा पत्थर खिड़की के कांच को चकनाचूर करता हुआ उसके पांव के पास आकर गिरा। मुखिया चौंक पड़ा। "अगर पता चला गया कि किस बदमाश ने यह फेंका है," वह पत्थर उठाकर ग़ुस्से से खौलता हुआ बोला, "तो मैं उसे अभी पत्थर फेंकना सिखा दूंगा। आख़िर यह सब हो क्या रहा है!" वह पत्थर को ग़ुस्से से घूरते हुए कहता रहा। "यही पत्थर गले में फंसे और दम घुट जाये उसका..."

"नहीं, नहीं, ऐसा नहीं कहते! भगवान तुम्हें बनाये रखे, भैया!" शराब बनानेवाले ने उसकी बात काटकर कहा; दहशत के मारे उसका रंग बिल्कुल सफ़ेद पड़ गया था। "भगवान तुम्हें बनाये रखे, इस लोक में भी और परलोक में भी, किसी को इस तरह नहीं कोसते!"

"तुम उसका पक्ष क्यों लेना चाहते हो? भगवान करे, उसके कीड़े पड़ें!.."

"ऐसी बात सोचना भी न, भैया! तुम्हें तो मालूम ही होगा मेरी स्वर्गवासी सास को क्या हुआ था?"

"तुम्हारी सास को?"

"हां, सास को। एक रात, इससे कुछ पहले का वक़्त होगा, सब लोग खाना खाने बैठे: मेरी स्वर्गवासी सास, मेरे स्वर्गवासी ससुर, हरवाहा, हरवाहे की घरवाली और कोई पांच बच्चे। मेरी सास ने बड़े बर्तन में से कुछ गलूश्की* ठंडी करने के लिए चमचे से निकालकर तश्तरी में रखीं। काम के बाद सभी लोग बेहद भूखे थे और उनके ठंडा होने का इंतज़ार नहीं कर रहे थे। वे लकड़ी की लंबी-लंबी तीलियों

---

* दूध या शोरबे में उबाली हुई लोई। – सं०

से कोंचकर गलूश्की निकाल-निकालकर खाने लगे। अचानक एक आदमी आ टपका – भगवान जाने वह कहां से आया था – और मेज़ पर उन लोगों के साथ बैठकर खाने के लिए कहने लगा। कोई भला भूखे आदमी को मना भी कैसे करता? एक तीली उसे भी दे दी गयी। लेकिन यह नया मेहमान तो इतनी जल्दी-जल्दी गलूश्की पर हाथ साफ़ करने लगा जैसे ग़ाय चारा खा रही हो। जब बाक़ी सब लोगों ने अपनी पहली गलूश्की ख़त्म करके दूसरी के लिए तश्तरी में तीली डाली तो पता चला कि वह तो गवर्नर साहब की कोठी के सामनेवाले मैदान की तरह सफ़ाचट हो चुकी थी। मेरी सास ने कुछ और निकालकर रख दीं, उन्होंने सोचा था कि मेहमान का तो पेट भर चुका होगा और वह कुछ दूसरों के लिए छोड़ देगा। मगर मजाल है जो एक टुकड़ा भी छोड़ा हो उसने। इस बार वह पहले से भी जल्दी सब ठूंस गया! और दूसरी तश्तरी भी साफ़ कर दी उसने! 'भगवान करे यही गलूश्की खाकर दम घुट जाये इसका!' मेरी सास ने मन ही मन उसे कोसा; और अगले ही क्षण उस मेहमान की सांस अटकने लगी और वह लुढ़क गया। सब लोग लपककर उसके पास पहुंचे लेकिन वह टें हो चुका था। गलूश्की से उसका दम घुट गया था।"

"अच्छा हुआ, वह था ही इस लायक़, लालची सुअर!" मुखिया ने कहा।

"तुम ऐसा सोचते होगे, मगर बात यहीं पर ख़त्म नहीं हो गयी: उसके बाद से मेरी सास को कभी चैन नहीं मिला। रात होते ही उस आदमी का भूत आता था। दांतों में गलूश्की दबाये वह मनहूस शैतान आकर चिमनी पर बैठ जाता था। दिन-भर बिल्कुल शांति रहती थी, और कहीं उसका नाम तक नहीं होता था; लेकिन जैसे ही अंधेरा होने लगता था, जब छत की ओर आंख उठाकर देखो वह पिशाच चिमनी पर टांगें लटकाये बैठा है।"

"दांतों में गलूश्की दबाये?"

"दांतों में गलूश्की दबाये।"

"बड़े अचरज की बात है, भैया! मैंने भी स्वर्गवासी महारानी के बारे में ऐसा ही एक क़िस्सा सुना था..."

इतना कहकर मुखिया बीच में ही रुक गया। खिड़की के बाहर बहुत-सी आवाज़ों का शोर और नाचनेवालों के पांवों की धमक सुनायी

दे रही थी। पहले तो बंदूरे पर तारों की कुछ झंकार सुनायी दी, फिर किसी ने उसी धुन पर गाना शुरू किया। तारों की झंकार तेज़ होती गयी, कुछ और आवाज़ें उस धुन में शामिल हो गयीं और आपस में घुल-मिलकर उन्होंने एक गीत का रूप धारण कर लिया :

क़िस्सा सुननेवालो, आओ
न सुना हो तो अब सुन जाओ
देखे हैं सिर कैसे-कैसे
अब न रहे वे पहले जैसे
मुखिया का सिर देखो जाकर –
वही हमारा काना बंदर –
सींग उगे हैं दो-दो उस पर
तेज़ नुकीले जैसे ख़ंजर
एक लुहार कहीं से लाओ
उसको यह तरकीब सुझाओ
मार हथौड़ा ढाले पंजा
इसके सिर पर कसे शिकंजा
भारी मोटा सरिया लाये
इसके सिर पर उसे जमाये
हाथ पड़े कुछ ऐसा कसकर
निकल पड़े बस भेजा बाहर
मुखिया तो है काना उल्लू
दारू पीता भर-भर चुल्लू
बदमाशी में अव्वल नंबर
भरा है उसके सिर में गोबर
हर लड़की पर राल टपकती
ललचायी-सी नज़र लपकती
कुत्ते जैसा पूंछ हिलाता
आगे-पीछे है मंडलाता
पकड़ो, जाता कहां है बंदर
जगह है इसकी क़बर के अंदर
खोद के उसमें, इसको गाड़ो
इसकी लंबी मूंछ उखाड़ो
खींचो इसकी लंबी चोटी
काटो इसकी बोटी-बोटी
लातों का यह भूत पुराना
बातों से कब भला यह माना।

"बहुत बढ़िया गाना है, चौधरी!" शराब बनानेवाले ने अपना सिर एक ओर झुकाकर फड़ककर कहा। उसने मुड़कर मुखिया की ओर देखा, जो ऐसी अपमान-भरी बातें सुनकर हक्का-बक्का रह गया था। "अव्वल दर्जे का! बस, इतनी बात बुरी है कि इन लोगों ने अपने मुखिया की चर्चा कुछ भले ढंग से नहीं की है..." एक बार फिर उसने अपने हाथ मेज़ पर रख लिये और आंखों में कोमलता का भाव लिये सुनने के लिए तन्मय होकर बैठ गया, क्योंकि खिड़की के बाहर से "एक बार फिर गाओ! एक बार फिर सुनाओ!" की आवाज़ें आ रही थीं। लेकिन थोड़ी-सी भी गहरी नज़र रखनेवाला आदमी फ़ौरन यह देख सकता था कि मुखिया अब अचरज की वजह से अपनी जगह जमा नहीं खड़ा था। पुरानी तजुर्बेकार बिल्ली नौसिखिये चूहे को इसी तरह अपनी पूंछ के पास कूदने-फांदने देती है; उसी बीच वह जल्दी-जल्दी यह तरकीब सोचती रहती है कि उसका भागकर बिल में घुस जाने का रास्ता कैसे रोका जाये। मुखिया की अच्छीवाली आंख अभी तक खिड़की पर जमी थी, लेकिन उसका हाथ, जिससे उसने पुलिसवाले को इशारा कर दिया था, दरवाज़े के लकड़ी के हैंडिल पर पहुंच चुका था। अचानक बाहर सड़क पर बहुत ज़ोर से शोर मचने लगा... शराब बनानेवाले ने, जिसके बहुत-से दूसरे गुणों में उत्सुकता का गुण भी शामिल था, जल्दी-जल्दी अपने पाइप में तंबाकू भरी और भागकर बाहर जा पहुंचा, लेकिन तब तक सारे छोकरे नौ दो ग्यारह हो चुके थे।

"तुम इतनी आसानी से मेरे पंजे से बचकर नहीं निकल सकते!" मुखिया एक नौजवान की, जिसने भेड़ की खाल का कोट उलटकर पहन रखा था, बांह पकड़कर खींचते हुए चिल्लाया। शराब बनानेवाला इस उपद्रवी की सूरत और नज़दीक से देखने के लिए लपककर वहां पहुंचा लेकिन लंबी-सी दाढ़ी और रंगा हुआ भयानक मुखौटा देखते ही वह सहमकर पीछे हट गया। "अरे, मुझसे बचकर नहीं जा सकते!" मुखिया अपने क़ैदी को खींचकर घर में लाते हुए दहाड़ा; क़ैदी भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे ऐसे चला आया मानो अपने ही घर में जा रहा हो।

"कार्पो, ज़रा अंधेरी कोठरी का दरवाज़ा तो खोलना!" मुखिया ने पुलिसवाले से कहा। "इसे अंधेरी कोठरी में बंद कर देंगे! और

फिर चलकर मुंशीजी को जगाते हैं, सारे पुलिसवालों को जमा करते हैं और इन सब लोगों को पकड़कर अभी यहीं मज़ा चखाते हैं।"

पुलिसवाले ने एक छोटा-सा ताला खड़खड़ाकर कोठरी खोल दी। उसी क्षण क़ैदी ने बड़े कमरे में अंधेरे का फ़ायदा उठाया और भरपूर ज़ोर लगाकर अपने आपको छुड़ा लिया।

"भागकर जायेगा कहां?" मुखिया उसका कालर पकड़कर गरजा।

"मुझे छोड़ दो! अरे, मैं हूं!" किसी ने महीन ऊंची आवाज़ में दुहाई दी।

"नहीं, बच्चू, यह तरकीब काम नहीं आने की! तुम औरत या शैतान की तरह भी चिचियाओ तब भी मुझे चकमा नहीं दे सकते!" और यह कहकर उसने उसे इतने ज़ोर से कोठरी में ढकेल दिया कि अभागा क़ैदी कराहता हुआ फ़र्श पर जा गिरा। फिर मुखिया पुलिसवाले को साथ लेकर मुंशीजी के घर की ओर चल पड़ा और शराब बनानेवाला रेल के इंजन की तरह धुआं उड़ाता हुआ उनके पीछे हो लिया।

तीनों विचारों में खोये हुए सिर झुकाये चले जा रहे थे कि अचानक जब वे एक अंधेरे नुक्कड़ पर मुड़े तो तीनों के सिर ज़ोर से किसी सख़्त चीज़ से टकराये और वे चिल्ला पड़े। उनकी चीख़ों के जवाब में उतने ही ज़ोर की तीन और चीख़ें सुनायी दीं। मुखिया ने अपनी अच्छीवाली आंख सिकोड़कर देखा और मुंशीजी को दो पुलिसवालों के साथ देखकर दंग रह गया।

"अरे, मैं तो आप ही के पास आ रहा था, मुंशीजी।"

"मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूं, मुखियाजी।"

"बड़ा अजीब चक्कर चल रहा है, मुंशीजी।"

"अंधेर मचा हुआ है, मुखियाजी।"

"क्यों, क्या हुआ?"

"छोकरों ने ऊधम मचा रखा है! गरोह बांधकर दुंद मचाते फिरते हैं। मुखियाजी, आपकी शान में तो ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं कि उन्हें दोहराते भी मुझे शर्म आती है; कोई शराबी रूसी भी अपनी मनहूस ज़बान से वैसी बातें निकालने से पहले दो बार सोचेगा।" (दुबले-पतले सींकिया मुंशीजी, जिन्होंने एक ढीली-ढाली गाढ़े की पतलून और ख़मीर के रंग की मटमैली वास्कट पहन रखी थी, ये बातें कहते समय अपनी गर्दन आगे-पीछे हिलाते जा रहे थे।) "मेरी

आंख अभी लगी ही थी कि इन कमबख़्त बदमाशों का शोर और उनके शर्मनाक गाने सुनकर मेरी आंख खुल गयी! मैं तो बाहर जाकर उनकी धज्जियां बिखेर देता, लेकिन जितनी देर में मैं अपनी पतलून और वास्कट पहनूं-पहनूं उतनी देर में वे सब रफ़ूचक्कर हो गये। लेकिन उनका सरग़ना भागकर न जा सका। अब वह उस हवालात की हवा खा रहा है जहां क़ैदियों को बंद किया जाता है। मैं तो यह जानने के लिए बेचैन था कि देखूं तो वह पंछी है कौन, लेकिन उसने अपने चेहरे पर इतनी कालिख मल रखी है कि बिल्कुल उस शैतान लोहार जैसा लगता है जो गुनहगारों के लिए जहन्नुम में कीलें बनाता होगा।"

"कपड़े क्या पहन रखे हैं उसने, मुंशीजी?"

"उसने भेड़ की खाल का काला कोट उलटकर पहन रखा है, मुखियाजी।"

"पक्की बात है, झूठ तो नहीं कर रहे हैं, मुंशीजी? अगर इसी वक़्त यही बदमाश मेरी झोपड़ी में बैठा हो तब आप क्या कहेंगे?"

"नहीं, मुखियाजी। आपने ख़ुद, भगवान मुझे ऐसी बात कहने के लिए क्षमा करे, थोड़ी-सी झूठी बात कही है।"

"अच्छी बात है, लालटेन देना मुझे! चलकर देखते हैं!"

लालटेन लायी गयी, दरवाज़ा खोला गया और मुखिया अपनी साली को सामने खड़ा देखकर हक्का-बक्का रह गया।

"माफ़ करना, मैं एक बात पूछती हूं," उसने आगे बढ़कर मुखिया के पास आते हुए कहा, "तुम्हारा जो थोड़ा-बहुत दिमाग़ है वह भी तो नहीं ख़राब हो गया है? जब तुमने मुझे उस कोठरी में ढकेला था तब तुम्हारी उस कानी खोपड़ी में रत्ती-भर भी अक़्ल बची थी कि नहीं? वह तो कहो तुम्हारी क़िस्मत अच्छी थी कि मेरा सिर जाकर उस लोहे के कुंडे से नहीं टकराया। तुमने मुझे चिल्ला-चिल्लाकर यह कहते नहीं सुना था कि अरे, यह मैं हूं? तुमने किसी बावले रीछ की तरह मुझे अपने फ़ौलादी पंजों में जकड़कर अंदर ढकेल दिया! मैं तो मनाती हूं कि नरक की अंधेरी कोठरी में तुम्हें भी शैतान ऐसे ही ढकेल दे!.."

यह आख़िरी बात उसने किसी निजी काम से बाहर जाते हुए दरवाज़े पर से की।

"हां, अब मेरी समझ में आया कि वह तुम थीं!" मुखिया ने

अपने होश-हवास ठीक होने पर कहा। “क्या कहते हैं, मुंशीजी, वह कमबख़्त उत्पाती सचमुच बड़ा बदमाश था, मानते हैं न?”

“सचमुच, बड़ा बदमाश था, मुखियाजी।”

“उन बेवक़ूफ़ों को कड़ी सज़ा देने का वक़्त आ गया है, है न? उन लोगों को किसी ढंग के काम में लगाना चाहिये।”

“हां, बिल्कुल ठीक है, मुखियाजी।”

“उन बेवक़ूफ़ों ने समझ रखा है... अरे, यह हंगामा क्या हो रहा है?.. मुझे ऐसा लगा कि सड़क पर से मुझे अपनी साली के चीख़ने की आवाज़ सुनायी दी; उन लोगों ने समझ रखा है कि मैं उनके बराबर का हूं। वे समझते हैं कि मैं भी उन्हीं जैसा हूं, सीधा-सादा कज़ाक!..” इतना कहकर मुखिया ने थोड़ा-सा अपना गला साफ़ किया और अपनी भवें सिकोड़कर घूरना शुरू किया जिससे साफ़ ज़ाहिर था कि वह किसी गंभीर समस्या के बारे में बोलने की तैयारी कर रहा है। “सन् अट्ठारह सौ... लानत है, ये कमबख़्त तारीख़ें मेरी ज़बान से कभी ठीक से निकलतीं ही नहीं; ख़ैर, उस साल उस ज़माने के कमिश्नर* लेदाची को यह काम सौंपा गया कि वह सारे कज़ाकों में से एक ऐसा आदमी चुने जो सबसे बढ़कर तेज़ और समझदार हो। वाह!” — और इस “वाह!” का उच्चारण मुखिया ने अपनी उंगली ऊपर उठाकर किया, “जो सबसे बढ़कर तेज़ और समझदार हो! महारानी के साथ रास्ता दिखानेवाले की हैसियत से जाने के लिए।”

“हां, हां, मुखियाजी। यह बात कौन नहीं जानता। हम सभी जानते हैं कि महारानी की कृपादृष्टि के लिए आपको कैसे चुना गया था। लेकिन इस वक़्त तो आपको मानना पड़ेगा कि आपकी बात ठीक नहीं थी: आपने थोड़ा-सा झूठ बोला था न, जब आपने कहा था कि भेड़ की खाल का उल्टा कोट पहने हुए इस बदमाश को आपने पकड़ा था?”

“जहां तक उल्टा कोट पहननेवाले उस बदमाश का सवाल है, उसके साथ तो हमें ऐसा सलूक करना चाहिये कि दूसरों के लिए नसीहत रहे: ज़ंजीरों में जकड़कर उसकी अच्छी तरह पिटाई की जानी चाहिये। उन्हें भी पता चले कि यहां किसका कोड़ा चलता है! ये लोग भूल

---

* कर वसूल करनेवाला सरकारी अधिकारी।

15-1333

न जायें कि मुखिया को ख़ुद ज़ार बादशाह तैनात करता है। उसके बाद हम दूसरे बदमाशों से निबट लेंगे : मुझे वह बात भूली नहीं है जब इन कमबख़्त बदमाशों ने मेरे सब्ज़ियों के खेत में सुअर हांक दिये थे और वे मेरी सारी बंदगोभियां और खीरे चर गये थे ; मैं वह बात भी नहीं भूला हूं जब इन शैतान के बच्चों ने मेरे अनाज की दांवनी करने से इंकार कर दिया था ; न वह बात भूला हूं ... लेकिन भाड़ में जायें ये सब लोग, इस वक़्त तो मुझे यह पता करना है कि वह उल्टे कोटवाला चालबाज़ कौन है।"

"सच कहता हूं, बड़ा चलता-पुर्ज़ा पंछी है वह!" शराब बनानेवाले ने कहा, जो इस पूरी बातचीत के दौरान अपने गालों में घिरे हुए क़िले की तोप की तरह धुआं भरता रहा था, और अब उसने छोटे-से पाइप पर अपने होंठों की पकड़ ढीली करके धुएं का एक पूरा फ़व्वारा छोड़ दिया था। "बुरा ख़्याल नहीं है, अगर इस तरह के आदमी को शराब की भट्ठी में काम पर लगा दिया जाये, और उससे भी अच्छा तो यह होगा कि सड़क के रोशनी के खंभे के बजाय उसे बलूत के पेड़ से लटका दिया जाये।"

शराब बनानेवाले को अपना यह चुटकुला सरासर बेवक़ूफ़ी की बात नहीं लगा, और दूसरों की दाद पाने का इंतज़ार किये बिना उसने ख़ुद अपनी पीठ ठोंकने के लिए ज़ोर का ठहाका लगाया।

इसी बीच वे लोग एक छोटी-सी झोपड़ी के पास पहुंच चुके थे, जो लगभग बिल्कुल ढह चुकी थी ; हमारे यात्रियों की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। वे दरवाज़े पर भीड़ लगाकर खड़े हो गये। मुंशीजी ने चाभी निकालकर उसे ताले में लगाकर कई बार झटका दिया, लेकिन चाभी उसके संदूक़ की निकली। उन सबकी अधीरता बढ़ती जा रही थी। जेब में हाथ डालकर मुंशीजी ने टटोलना और कोसना शुरू किया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। "यह रही!" उसने आख़िरकार झुककर अपनी पतलून की थैले जैसी जेब की तली में से चाभी निकालते हुए कहा। यह बात सुनकर हमारे सूरमाओं के दिल, एक तरह से, आपस में मिलकर एक ही दिल बन गये, और यह बड़ा-सा दिल इतने ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा कि उसकी बेसुरी धड़कन ताले की खड़खड़ाहट में भी नहीं दब सकी। दरवाज़ा खुला और ... मुखिया का रंग बिल्कुल सफ़ेद पड़ गया ; शराब बनानेवाले को अचानक ठंडी हवा के तेज़

झोंके की मार का आभास हुआ और उसे ऐसा लगा कि उसके बाल उड़कर आसमान पर पहुंच जाना चाहते हैं। मुंशीजी के चेहरे पर आतंक का भाव छा गया, पुलिसवाले ज़मीन पर गड़े रह गये और उनके मुंह एकसाथ ऐसे खुले कि फिर उन्होंने बंद होने का नाम न लिया: उनके सामने मुखिया की साली खड़ी थी!

उसे भी उन लोगों से कुछ कम आश्चर्य नहीं हो रहा था, लेकिन उसके होश-हवास कुछ ठिकाने आये, और उसने उनकी तरफ़ क़दम बढ़ाने की तैयारी की।

"रुक जाओ!" मुखिया बदहवास होकर चिल्लाया और उसने धड़ से दरवाज़ा उसके मुंह पर बंद कर दिया। "भाइयो! यह तो शैतान है!" वह कहता रहा। "आग लाओ! जल्दी से आग लाओ! झोपड़ी सरकारी संपत्ति है तो हुआ करे, मुझे इसकी परवाह नहीं! फूंक दो इसे, जलाकर राख कर दो, ताकि इस धरती पर उस शैतान की बच्ची का नाम-निशान बाक़ी न रह जाये!"

मुखिया की साली दरवाज़े के पीछे से यह भयानक फ़ैसला सुनकर दहशत के मारे चीख़ पड़ी।

"क्या कह रहे हो, भाइयो!" शराब बनानेवाला बीच में बोला। "हे दयानिधान! तुम लोगों के बाल न जाने कब के पक गये और अभी तक रत्ती-भर अक़्ल नहीं आयी: मामूली आग से कहीं चुड़ैल जलती है! चुड़ैलों और भूतों को तो बस पाइप की आग जला सकती है। रुको, मैं अभी सब ठीक किये देता हूं!"

यह कहकर उसने अपने पाइप में से कुछ दहकती हुई चिंगारियां मुट्ठी-भर पयाल पर उलटकर उसे ख़ूब फूंका। तब तक मुखिया की साली बिल्कुल निराश हो चुकी थी, और वह उनकी मिन्नत-ख़ुशामद करने लगी।

"भाइयो, ज़रा ठहरो! हो सकता है कि हम जो कुछ करने जा रहे हैं वह पाप हो; कौन जाने वह शैतान हो ही नहीं?" मुंशीजी ने कहा। "अगर वह, जो कोई भी वहां अंदर है, सलीब का निशान बनाने को तैयार हो जाये तो वह इस बात का पक्का सबूत होगा कि वह शैतान नहीं है।"

दूसरे लोगों को भी यह सुझाव पसंद आया।

"मुझसे दूर हट जा!" मुंशी दरवाज़े की दरार के पास मुंह

करके अपनी बात कहता रहा। "अगर तू जहां है वहीं रहेगा तो हम दरवाज़ा खोल देंगे।"

उन लोगों ने दरवाज़ा खोल दिया।

"सलीब का निशान बना!" मुखिया ने जल्दी से अपने पीछे नज़र डालते हुए कहा, मानो ज़रूरत पड़ने पर जल्दी से भाग जाने के लिए कोई सुरक्षित जगह चुन रहा हो।

मुखिया की साली ने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"शैतान, मेरा ठेंगा! यह तो मुखियाजी की साली ही है!"

"तुझे इस झोपड़ी में कौन-सा भूत-प्रेत खींच लाया?"

मुखिया की साली ने सिसकियां ले-लेकर बयान किया कि किस तरह लड़कों ने उसे सड़क पर पकड़ लिया था और, उसके लाख विरोध करने पर भी उसे खिड़की में से अंदर ढकेलकर उसके पल्ले कीलों से जड़ दिये थे। मुंशीजी ने जाकर देखा: सचमुच पल्ले क़ब्ज़ों पर से उखाड़ लिये गये थे और उन्हें ऊपरवाले चौखटे पर एक तख़्ता लगाकर कीलों से जड़ दिया गया था।

"और तू, काना शैतान कहीं का!" वह आगे बढ़कर मुखिया के पास आकर ज़ोर से चीख़ी; मुखिया सहमकर पीछे हट गया और अपनी अच्छीवाली आंख से उसे बड़े ध्यान से देखता रहा। "मैं तेरी सारी चाल जानती हूं; तू मुझे ज़िंदा जला देना चाहता था। तू यह मौक़ा देखते ही लपक पड़ा ताकि तुझे गांव की छोकरियों का पीछा करने की खुली छूट मिल जाये, ताकि कोई यह देखनेवाला न रह जाये कि नाना कैसे बुद्धू बन रहे हैं। तू समझता है कि मैं जानती नहीं कि आज शाम को हान्ना पर क्या डोरे डाले जा रहे थे? अरे, मुझे रत्ती-रत्ती सब मालूम है। तेरी गोबर-भरी खोपड़ी में जितनी अक़ल है उससे कहीं ज़्यादा अक़ल चाहिये मुझे बेवक़ूफ़ बनाने के लिए। मैंने बहुत बर्दाश्त किया है, लेकिन किसी दिन मैं तुझे इसका मज़ा चखाऊंगी..."

यह कहकर उसने मुखिया को धमकाते हुए मुक्का दिखाया और उसे वहीं भौचक्का खड़ा छोड़कर पांव पटकती हुई चली गयी। "नहीं, इसमें कोई शक नहीं है कि इसमें शैतान का गंदा हाथ था," मुखिया ने अपना सिर खुजाकर सोचा।

"पकड़ लिया!" पुलिसवालों ने उसी समय भागकर आते हुए कहा।

"किसे पकड़ लिया?" मुखिया ने पूछा।

"उसी उल्टे कोटवाले शैतान को।"

"ज़रा लाना तो इधर, मैं अभी उसकी ख़बर लेता हूं!" मुखिया ने क़ैदी की बांहों को पकड़ते हुए कहा। "तुम लोगों का दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया है: यह तो वह शराबी कलेनिक है!"

"क्या मुसीबत है?! लेकिन हमें पक्का मालूम है कि हमने उसे पकड़ा था, मुखियाजी!" पुलिसवालों ने जवाब दिया। "उन कमबख़्त बदमाशों ने हम लोगों को सड़क पर घेर लिया था; वे नाच रहे थे, हमें धक्के दे रहे थे, जीभ निकालकर हमें चिढ़ा रहे थे, हमारी बांहें खींच रहे थे... और उसके बजाय इस कौए को हमने कैसे पकड़ लिया, भगवान ही जाने!"

"अपने अधिकार के बल पर और सारी जनता के अधिकार के बल पर मैं हुक्म देता हूं," मुखिया ने एलान किया, "कि इस अपराधी को फ़ौरन पकड़ा जाये, और जो लोग भी सड़क पर घूमते हुए पाये जायें उनके साथ भी यही सलूक किया जाये, और उन्हें सज़ा देने के लिए मेरे सामने हाज़िर किया जाये!.."

"अरे नहीं, ऐसा न कीजिये, मुखियाजी!" कई पुलिसवाले मुखिया के सामने बहुत झुककर गिड़गिड़ाये। "हम लोगों पर दया कीजिये: आपने उन लोगों के मनहूस चेहरे देखे होते... भगवान जानता है, जबसे हम पैदा हुए हैं, या जबसे हमारा नामकरण हुआ है, तबसे हममें से किसीने ऐसे डरावने थोबड़े नहीं देखे हैं। उनको देखते ही आप तो ऐसा डर जाते, मुखियाजी, कि फिर कोई बुढ़िया भी मोम का पुतला बनाकर आपका डर न निकाल पाती।"

"अगर तुमने ज़्यादा चूं-चपड़ की तो अभी मैं तुम्हारा मोम का पुतला बना दूंगा! कमबख़्तो, जैसा तुमसे कहा जाता है वैसा करो! मुझे तो लगता है कि उन लोगों के साथ तुम्हारी मिलीभगत है! क्या तुम लोग बग़ावत कर रहे हो? यह है क्या?.. आख़िर बात क्या है?.. तुम लोग दंगा मचाना चाहते हो!.. तुम लोग... मैं कमिश्नर साहब से शिकायत कर दूंगा! अभी इसी वक़्त! सुन लिया? फ़ौरन, इसी दम! अब भागो यहां से, बिल्कुल सरपट! और मुझे तुम लोगों की सूरत न दिखायी दे... इतना ख़्याल रखना कि तुम..."

वे सब वहां से दौड़ते हुए चले गये।

५

डूबी लड़की

जिस आदमी ने यह सारा हंगामा खड़ा किया था वह दुनिया की सारी चिंताओं से मुक्त, अपने पीछे होनेवाली सारी चीख़-पुकार से बेख़बर, उस पुराने मकान और तालाब की ओर चला जा रहा था। मुझे आप लोगों को यह बताने की तो शायद ज़रूरत नहीं कि यह आदमी कोई और नहीं अपना लेव्को ही था। उसके भेड़ की खाल के काले कोट के बटन खुले हुए थे। वह अपना हैट हाथ में लिये हुए था। उसके चेहरे पर पसीना बह रहा था। चांद की ओर अपना भव्य गंभीर चेहरा किये मेपल का जंगल उसके सामने फैला हुआ था। शांत तालाब की ओर से ताज़ा हवा के झोंके हमारे थके हुए राही की ओर आ रहे थे; उनका आनंद लेने के लिए वह थोड़ी देर को तालाब के किनारे की ठंडी-ठंडी घास पर आराम करने के लिए लेट गया। चारों ओर निस्तब्धता छायी हुई थी, जो बीच-बीच में बस बुलबुलों की दूर जंगल से आती हुई सुरीली आवाज़ से भंग हो जाती थी। बड़ी तेज़ी से उस पर सो जाने की प्रबल इच्छा छा गयी; उसकी पलकें झपकने लगीं, उसके थके हुए अंग शिथिल पड़ गये, उसका सिर एक ओर को झुक गया... "नहीं, मैं यहां नहीं सो सकता!" उसने उठकर खड़े होते हुए आंखें मलकर कहा। उसने चारों ओर देखा: रात की छटा और भी निखर आयी थी। चंद्रमा के प्रकाश में एक विचित्र, मंत्रमुग्ध कर देनेवाली चमक पैदा हो गयी थी। उसने ऐसा नयनाभिराम दृश्य पहले कभी नहीं देखा था। आस-पास हर जगह रुपहला कुहरा छा गया था। हवा में सेब के बौर और रात के फूलों की सुगंध बसी हुई थी। आश्चर्यचकित होकर उसने तालाब के शांत जल को देखा। पुरानी हवेली का उल्टा प्रतिबिंब पानी में दिखायी दे रहा था, उसमें नयी चमक-दमक और भव्यता पैदा हो गयी थी। उसके अंधेरे दरवाज़ों की जगह चमचमाते हुए कांचवाली खिड़कियां और दरवाज़े लग गये थे। उनके निर्मल शीशों में सोने की चमक थी। फिर उसे लगा कि खिड़की खुल रही हैं। वह दम साधे हुए था, तनिक भी हिलने-डुलने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी और वह अपनी नज़रें तालाब पर जमाये था। उसे ऐसा लगा कि तालाब उसे अपनी गहराई की ओर

खींचे लिये जा रहा है। वह एकटक देखता रहा : पहले खिड़की में एक गोरी-गोरी कुहनी दिखायी दी, फिर गहरे सुनहरे रंग के बालों की लहरों के बीच झमकता हुआ चमकदार आंखोंवाला एक नौजवान चेहरा आकर कुहनी पर टिक गया। वह टकटकी बांधे देख रहा था; उस सुंदरी ने अपने सिर को हल्का-सा झटका दिया, हाथ हिलाया और हंस दी... उसका दिल धक से रह गया... पानी में हिलोरें उठीं और खिड़की फिर बंद हो गयी। वह धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता हुआ तालाब के पास से चला आया और नज़रें उठाकर उसने हवेली की ओर देखा : अंधेरे दरवाज़े खुले हुए थे और खिड़कियों के शीशे चांदनी में चमक रहे थे। "इससे यही पता चलता है कि लोग कैसी बकवास करते हैं," उसने सोचा। "घर बिल्कुल नया है; रंग-रोग़न ऐसा ताज़ा है जैसे आज ही लगाया गया हो। और उसमें कोई रहता भी है।" वह चुपचाप घर के और पास चला गया, लेकिन घर से कोई आवाज़ सुनायी नहीं दी। उसके चारों ओर बुल-बुलों के मधुर गीतों की तेज़ गूंज पूरे वैभव से सुनायी दे रही थी, और आख़िरकार जब इन गीतों ने मंद पड़ते-पड़ते बिल्कुल दम तोड़ दिया मानो स्वयं उनकी भरपूर मिठास ने उनका गला घोंट दिया हो, तो उनकी जगह झींगुरों की रीं-रीं और तालाब के झिलमिलाते हुए पानी में अपनी चिकनी चोंच डुबोते हुए दलदली पक्षियों के कर्कश स्वर ने ले ली। लेव्को के हृदय में मधुर निस्तब्धता और स्वतंत्रता की भावना छा गयी। अपने बंदूरे के तार छेड़ते हुए उसने गाना शुरू किया :

दूर गगन के चांद रुपहले
झिलमिल तारे, जगमग तारे,
धरती पर तुम चमको आकर!
उस कुटिया पर ज्योति बिखेरो,
बरसाओ उस सुंदर मुखड़े पर
जाकर अपनी कांति मनोहर!

खिड़की धीरे से खुली और वही सुंदर मुखड़ा, जिसका प्रतिबिंब उसने तालाब में देखा था, बाहर झांककर उसका गीत सुनने लगा। उसकी लंबी-लंबी पलकें अधझुकी थीं। उसका उदास चेहरा चांद की रोशनी की तरह सफ़ेद था, लेकिन कैसा सुंदर-सलोना मुखड़ा था!

वह हंसी... लेव्को कांप उठा।

"बांके कज़ाक, मुझे एक गीत सुना दो ना!" उसने अपना सिर एक ओर को ढुलकाकर और अपनी लंबी-लंबी पलकें झुकाकर धीरे से पुकारकर कहा।

"कौन-सा गीत सुनोगी, सुंदर बाला?"

उसके उदास चेहरे पर आंसू ढलकने लगे।

"मेरे मीत," वह बोली, उसके स्वर में एक ऐसा भाव था जिसने उसके हृदय को छू लिया। "मेरे मीत, मेरी सौतेली मां को कहीं से खोज लाओ! तुम जो चाहोगे वह मैं करूंगी। मैं तुम्हें इनाम दूंगी। मैं तुम्हें बहुत अच्छा, बहुत सुंदर इनाम दूंगी। मेरे पास कढ़े हुए रेशमी कफ़ों का जोड़ा है, मेरे पास मूंगे के दाने हैं और हार हैं। मैं तुम्हें मोती टंका हुआ कमरबंद दूंगी। मेरे पास ढेरों सोना है... मेरे मीत, मेरी सौतेली मां को ढूंढ लाओ! वह भयानक चुड़ैल है: उसने मुझे दुनिया में कभी चैन नहीं लेने दिया। वह मुझे बहुत सताती थी, मुझसे बांदियों की तरह काम लेती थी। मेरी सूरत देखो: उसने अपने मनहूस जादू के असर से मेरे गालों का सारा रंग निचोड़ लिया। मेरी गोरी-गोरी गर्दन को देखो: यह देखो – ये कभी नहीं धुल सकते। ये कभी नहीं धुल सकते! उसके फ़ौलादी पंजों के ये नीले-नीले निशान किसी चीज़ से नहीं धुल सकते। मेरी इन गोरी-गोरी टांगों को देखो: ये चलते-चलते थककर चूर हो गयी हैं; मुलायम क़ालीनों पर नहीं तपती हुई रेत पर, गीली ज़मीन पर, वे नुकीले कांटों पर चलती रही हैं; मेरी आंखों को देखो: वे आंसुओं से धुंधला गयी हैं... उसे खोज लाओ, मेरे मीत, मेरी सौतेली मां को कहीं से खोजकर मुझे ला दो!.."

यह कहते-कहते उसकी आवाज़ अचानक ऊंची हुई, फिर वह चुप हो गयी। उसके पीले गालों पर आंसुओं की नदियां बह चलीं। नौजवान का सीना दया और करुणा की पीड़ाजनक भावना के बोझ से दबने लगा।

"मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करने को तैयार हूं, ऐ सुंदर बाला!" उसने उत्कंठित स्वर में कहा, "लेकिन मुझे यह तो बताओ कि मैं उसका पता कहां और कैसे लगाऊं?"

"देखो! वह देखो!" वह जल्दी से बोली, "यह रही वह!

वह तालाब के किनारे मेरी सहेलियों के साथ घूमर नाच नाच रही है और चांदनी में नहा रही है। लेकिन वह बहुत दुष्ट और चालाक है। उसने एक डूबी हुई औरत का भेस बना लिया है; लेकिन मैं जानती हूं, मैं महसूस करती हूं कि वह यहीं है। उसकी वजह से मैं बेचैन रहती हूं और मेरा दम घुटता रहता है। उसकी वजह से मैं तेज़ी से और आज़ादी के साथ मछली की तरह तैर भी नहीं सकती। मैं डूब जाती हूं और भारी चाभी की तरह तली में पहुंच जाती हूं। मेरी ख़ातिर उसे खोजकर ला दो, मेरे मीत!"

लेव्को ने तालाब के किनारे की ओर नज़रें घुमायीं: रुपहले धुंधलके में उसे कुमुदनी जैसे सफ़ेद ढीले वस्त्र पहने कुछ परछाइयां-सी दिखायी दीं; उनके गले में सोने के हार, सोने के सिक्कों की हमेलें चमक रही थीं; लेकिन ख़ुद उनका रंग पीला था; उनके शरीर, ऐसा लगता था, मानो झीने-झीने बादलों से गढ़कर बनाये गये हों और रुपहली चांदनी की चमक उनके पार साफ़ दिखायी देती थी। नाच का घेरा उसके पास आता जा रहा था। उसे उनकी आवाज़ें सुनायी दे रही थीं।

"आओ, कौआ-डुबकी खेलें, आओ, कौआ-डुबकी खेलें!" वे सब शोर मचाकर कहने लगीं; उनकी आवाज़ें ऐसी लग रही थीं जैसे रात के सन्नाटे में हवा के झोंके अपनी नर्म-नर्म सांसों से तालाब के किनारे सरकंडे की झाड़ियों को छेड़ते हुए गुज़र रहे हों।

"मगर कौआ कौन बनेगा?"

उन्होंने हत्थी कटायी और एक लड़की निकल आयी। लेव्को ने उसे ध्यान से देखा। उसका चेहरा, उसका पहनावा – उसकी हर चीज़ बिल्कुल दूसरी लड़कियों जैसी थी। हालांकि उसे साफ़ दिखायी दे रहा था कि उसे कौआ बनना पसंद नहीं था। नाचती हुई लड़कियों का झुरमुट थिरकते-थिरकते पांत बनाकर कौए के आगे तेज़ी से भागा और कौआ तेज़ी से अपने शिकार की ओर झपटा।

"नहीं, मैं कौआ नहीं बनूंगी!" आख़िरकार उस लड़की ने थककर हांपते हुए कहा। "मुझे मां-मुर्ग़ी पर इतना तरस आता है कि मैं उसके बच्चों पर झपट्टा नहीं मार सकती!"

"तुम चुड़ैल नहीं हो सकतीं!" लेव्को ने सोचा।

"फिर कौआ कौन बनेगा?"

लड़कियां एक बार फिर हत्थी कटाने को तैयार हुईं।

"मैं बनूंगी कौआ!" उनमें से एक लड़की ने पुकारकर कहा।

लेव्को ने ध्यान से उसकी सूरत देखी। वह बिना झिझके तेज़ी से भागती हुई लड़कियों की पांत पर झपटी और अपने शिकार को घेरने के लिए तीर की तरह तेज़ी से इधर-उधर भागने लगी। अचानक लेव्को ने देखा कि उसका शरीर दूसरों की तरह चांदनी में चमक नहीं रहा था: उसके शरीर के अंदर एक काली गुठली जैसी दिखायी दे रही थी। हवा में एक चीख़ गूंजी: कौआ एक लड़की पर झपटा और उसने उसे पकड़ लिया। लेव्को को ऐसा लगा कि उसने उसके हाथों से नुकीले पंजे जैसे बाहर को निकले हुए देखे और उसके चेहरे पर दुष्टता-भरी ख़ुशी चमक उठी।

"यही है चुड़ैल!" वह उसकी ओर उंगली से इशारा करते हुए घर की ओर मुड़कर चिल्लाया।

नौजवान जल-परी हंस पड़ी और लड़कियां विजयोल्लास से चिल्लाती हुई उस कलमुंहे कौए को खींचकर ले चलीं।

"मैं तुम्हें क्या इनाम दूं, मेरे मीत? मैं जानती हूं कि तुम्हें सोना नहीं चाहिये; तुम्हें अपनी हान्ना से प्यार है, लेकिन तुम्हारा निर्दयी बाप तुम्हें उससे ब्याह नहीं करने देता। वह अब तुम्हें नहीं रोकेगा: यह पर्चा ले जाकर उसे देना..."

उसने अपना गोरा-गोरा हाथ बढ़ाया, उसका चेहरा जादुई आभा से चमक उठा... उत्कंठित उल्लास से कांपते हुए लेव्को का दिल ज़ोर से धड़कने लगा, उसने लपककर पर्चा ले लिया और... जाग पड़ा।

६

जब आंख खुली

"क्या यह सचमुच सपना था?" लेव्को मन ही मन सोचने लगा। "ऐसा सच्चा, बिल्कुल जीता-जागता!.. कैसी अजीब बात है, कैसी अजीब बात है!.." उसने चारों ओर नज़र डालकर कई बार दोहराया।

चांद को देखने से, जो अब सीधे उसके सिर के ऊपर आकर ठहर

गया था, पता चलता था कि आधी रात का समय हो गया है; चारों ओर निस्तब्धता का राज था; तालाब की ओर से ठंडी हवा चल रही थी; ऊपर वह टूटा-फूटा पुराना घर अपने तख़्ते जड़े हुए किवाड़ों के पीछे उदास भाव से खड़ा था; उस पर जमी हुई काई और हर जगह उगे हुए घास-फूस से पता चल रहा था कि उसमें बसनेवाले आख़िरी इंसान उसे बहुत पहले छोड़कर चले गये थे। उसने अपनी उंगलियां फैलायीं, जिन्हें उसने सोते समय भींच रखा था और अपने हाथ में पर्चे का स्पर्श अनुभव करके वह आश्चर्य से चिल्ला पड़ा। "कितना अच्छा होता अगर मैं इसे पढ़ पाता!" उसने पर्चे को हाथ में उलट-पुलटकर देखते हुए झुंझलाकर सोचा। उसी क्षण उसे अपने पीछे कुछ आवाज़ें सुनायी दीं।

"डरो नहीं, आगे बढ़कर उसे पकड़ लो! इतना डर किसलिए रहे हो! हम दस आदमी हैं! मैं शर्त लगाता हूं कि वह इंसान ही है, शैतान तो नहीं!" लेव्को ने मुखिया को चिल्लाकर अपने साथियों से कहते हुए सुना, और इसके फ़ौरन बाद लेव्को ने महसूस किया कि बहुत-से हाथों ने उसे कसकर पकड़ रखा है, जिनमें से कई हाथ डर के मारे बुरी तरह कांप रहे हैं। "आओ, यार, अब अपना यह बदसूरत मुखौटा उतार दो! बस, आज भर को बहुत शरारत कर चुके!" मुखिया ने उसका कालर पकड़कर आदेश दिया। इसके बाद के शब्द उसके होंठों पर जमकर रह गये; उसकी अच्छीवाली आंख अपने कोटर में से बाहर निकली पड़ रही थी। "बेटा लेव्को!" उसने आश्चर्य से पीछे हटते हुए कहा और उसके हाथ शिथिल होकर नीचे गिर पड़े। "अच्छा, तू था, कुत्ते के पिल्ले! लानत है मुझ पर, तू शैतान की औलाद! और मैं सोच रहा था कि कौन बदमाश है, कौन जहन्नुमी कीड़ा यह सारी शरारत कर रहा है! अब पता चला कि तू था, तेरे बाप के गले में कच्ची खिचड़ी फंसकर उसका दम घुट जाये, तू सड़क पर यह सारा ऊधम मचा रहा था, और वे गीत गा रहा था?.. अच्छा, अच्छी बात है, अच्छी बात है, लेव्को! तो अब क्या चाहता है तू? क्या तू चाहता है कि तेरी खाल खिंचवा ली जाये? बांध दो इसे!"

"ठहरो, पापा! मुझसे यह पर्चा तुम्हें देने को कहा गया है," लेव्को बोला।

"मेरे पास कोई पर्चा-वर्चा देखने का वक़्त नहीं है, छोकरे! बांध दो इसे!"

"ठहरिये, मुखियाजी!" मुंशीजी ने पर्चा खोलते हुए कहा, "यह तो कमिश्नर साहब के हाथ का लिखा हुआ है!"

"कमिश्नर साहब?"

"कमिश्नर साहब?" पुलिसवालों ने यंत्रवत् दोहराया।

"कमिश्नर साहब? ताज्जुब है! मुझे तो यक़ीन नहीं आता!" लेव्को ने मन ही मन सोचा।

"पढ़ो, पढ़ के सुनाओ!" मुखिया ने कहा, "कमिश्नर साहब ने क्या लिखा है?"

"सुनें तो कमिश्नर साहब ने क्या लिखा है!" शराब बनानेवाले ने अपना पाइप दांतों से दबाकर दियासलाई जलाते हुए कहा।

मुंशीजी ने गला साफ़ करके पढ़ना शुरू किया:

"'फ़रमान मुखिया येवतुख़ माकोगोनेंको के नाम। बूढ़े गधे, हमें मालूम हुआ है कि पुराना बक़ाया जमा करने और गांव का इंतज़ाम ठीक से चलाने के बजाय तुम्हारा दिमाग़ बिल्कुल पिलपिला हो गया है और तुम्हारी हरकतों से सारा गांव तंग आ चुका है...'"

"मुझे कुछ सुनायी नहीं दे रहा है!" मुखिया ने बीच में टोककर कहा। "भगवान क़सम, कुछ भी नहीं!"

मुंशीजी ने फिर से पढ़ना शुरू किया:

"'फ़रमान मुखिया येवतुख़ माकोगोनेंको के नाम। बूढ़े गधे, हमें मालूम हुआ है कि...'"

"बस, बस, रहने दो! दोबारा मत पढ़ो!" मुखिया ने चिल्लाकर कहा, "मैंने सुना भले ही न हो लेकिन मैं जानता हूं कि इसका उस मामले से कोई संबंध नहीं है जिसे हम इस वक़्त निबटा रहे हैं। आगे पढ़ो!"

"'लिहाज़ा मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि फ़ौरन अपने बेटे लेव्को माकोगोनेंको की शादी तुम अपने ही गांव की कज़ाक लड़की हान्ना पेत्रिचेंकोवा के साथ कर दो, और इसके अलावा बड़ी सड़क के पुलों की मरम्मत भी करवा दो और मेरी इजाज़त के बिना मुक़ामी मिल्कियत के घोड़े तहसीलदारों को न दिया करो, चाहे वे सीधे सरकारी दफ़्तर से ही सफ़र करके क्यों न आ रहे हों। अगर अपने अगले दौरे के वक़्त

मुझे मालूम हुआ कि मेरे इन हुक्मों की तामील नहीं की गयी है तो मैं सीधे तुम्हें ही ज़िम्मेदार ठहराऊंगा। कमिश्नर लेफ़्टिनेंट कोज़्मा देर्काच-द्रिश्पानोव्स्की, रिटायर।' "

"तो, यह बात है!" मुखिया ने कहा, उसका मुंह खुला का खुला रह गया। "सुन लिया? मुखिया हर बात के लिए जवाबदेह होता है, इसलिए जैसा मैं कहूं वैसा ही करो! मेरे हर हुक्म की तामील होनी चाहिये! वरना मैं तुम्हारे साथ ऐसा सलूक करूंगा कि याद करोगे... और जहां तक तुम्हारा सवाल है," उसने लेव्को की ओर मुड़कर अपनी बात जारी रखी, "कमिश्नर साहब की हिदायत के मुताबिक़, हालांकि कमबख़्त मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें इस बात का पता कैसे चला – मैं तुम्हारी शादी तो कर दूंगा; लेकिन पहले तुम्हें मेरे कोड़े का मज़ा चखना पड़ेगा! उस कोड़े का जो देव-प्रतिमाओं के स्थान के पास मेरी दीवार पर टंगा है। मैं कल उसे आज़माऊंगा... यह पर्चा तुम्हें कहां मिला?"

उसके भाग्य ने अचानक जो आश्चर्यजनक पलटा खाया था उसके बावजूद लेव्को में इतनी हाज़िरदिमाग़ी बाक़ी थी कि उसने बिल्कुल ही दूसरा जवाब गढ़ लिया और पर्चा उसके हाथ लगने की सच्ची कहानी पर परदा डाले रहा।

"कल शाम को मैं शहर गया था," वह बोला, "और वहां जब कमिश्नर साहब अपनी बग्घी पर से उतर रहे थे तो उनसे मेरी मुला-क़ात हो गयी थी। जब उन्होंने सुना कि मैं अपने इस गांव का हूं, तो उन्होंने मुझे यह पर्चा दिया और, बापू, तुम्हें यह भी बता देने के लिए मुझसे कहा कि वापसी पर वह हमारे यहां आयेंगे और खाना खायेंगे।"

"यह कहा था उन्होंने?"

"बिल्कुल कहा था!"

"सुन लिया?" मुखिया ने सीना फुलाकर अपने साथियों की ओर मुड़ते हुए कहा, "कमिश्नर साहब ख़ुद हम जैसे नाचीज़ लोगों में से एक के यहां, मतलब यह कि मेरे यहां, खाना खाने आयेंगे!" इतना कहकर मुखिया ने एक उंगली और अपना सिर एक ओर को झुकाया मानो कुछ सुन रहा हो। "कमिश्नर साहब, सुन लिया, कमिश्नर साहब मेरे यहां खाना खाने आ रहे हैं! क्या समझते हैं,

मुंशीजी, और तुम भी, भैया, यह कोई मामूली इज़्ज़त की बात नहीं है! या है, बोलो?"

"जहां तक मुझे याद पड़ता है," मुंशीजी ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "आपसे पहले किसी मुखिया ने कमिश्नर साहब को अपने यहां खाना नहीं खिलाया है।"

"मुखिया मुखिया में फ़र्क़ होता है!" मुखिया ने आत्म-संतोष के भाव से एलान किया। उसने मुंह टेढ़ा करके भर्राये हुए दमदार ठहाके की आवाज़ निकाली, जैसे दूर कहीं बादल गरज रहे हों। "क्या राय है आपकी, मुंशीजी, क्या मैं अपने नामी-गिरामी मेहमान की ख़ातिर यह फ़रमान जारी कर दूं कि हर परिवार को देग के लिए एक मुर्ग़ा, एक थान कपड़ा, और शायद कुछ और भी देना पड़ेगा... क्यों?"

"ज़रूर, मुखियाजी!"

"तो शादी कब होगी, बापू?" लेव्को ने पूछा।

"शादी? मैं बताऊं कि मैं तुम्हारी शादी के सिलसिले में क्या करनेवाला हूं!.. तो जैसा कि हमारे नामी-गिरामी मेहमान ने फ़रमाइश की है... हम लोग कल ही पुरोहित से कहकर तुम्हारा बंदोबस्त करवाये देते हैं। जहन्नुम में जाओ तुम! कमिश्नर साहब भी देख लें कि हम अपना फ़र्ज़ कैसे निभाते हैं! अच्छा, लोगो, अब सोने का वक़्त हो गया! जाओ तुम लोग!.. आज जो कुछ हुआ उससे मुझे वह ज़माना याद आता है जब मैं..." यह बात कहते हुए मुखिया ने अपने सुननेवालों को हमेशा की तरह बड़े रोब से भवें सिकोड़कर देखा।

"चल पड़ा मुखिया का चर्ख़ा कि वह महारानी की सवारी के साथ कैसे गया था!" लेव्को ने कहा और बहुत ख़ुश होकर तेज़ क़दमों से चेरी के छोटे-छोटे पेड़ोंवाले घर की ओर चल पड़ा। "मेरी नेक सुंदरी, भगवान तुम्हें हमेशा हर चिंता से दूर रखे!" उसने मन ही मन सोचा। "अगले जनम में भी तुम सदा पाक फ़रिश्तों के बीच मुस्कराती रहो! आज रात जो चमत्कार हुआ है उसके बारे में मैं किसी को नहीं बताऊंगा; यह भेद मैं बस एक आदमी को बताऊंगा, हान्ना को। बस वही मेरी बात पर विश्वास करेगी और हम दोनों उस अभागी डूबी हुई लड़की की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करेंगे!"

यह कहते-कहते वह घर के पास पहुंच गया: खिड़की खुली हुई थी; चांद की चमकती किरणें खिड़की के पार जाकर सोती हुई हान्ना

के शरीर पर पड़ रही थीं ; उसके गालों पर नर्म-नर्म लाली की दमक थी ; उसके होंठ हिल रहे थे और बुदबुदाकर उसका नाम ले रहे थे। "सोओ, मेरी मोतियों की खान! तुम्हें सारी सुंदर-सुंदर अच्छी-अच्छी चीज़ों के सपने आयें ; लेकिन हमारा जागरण तुम्हारे इन सारे सपनों से भी सुखद होगा!" उसके ऊपर सलीब का निशान बनाकर उसने खिड़की बंद कर दी और चुपके से वहां से चला आया। कुछ ही मिनट बाद गांव में हर चीज़ सो रही थी ; बस अकेला चांद वैभवशाली उक्राइनी आकाश के अनंत विस्तार पर अपनी पूरी जादुई छटा के साथ चमकता रहा। ऊपर आकाश पर इसी वैभव का राज रहा, और रात, दिव्य रात, उसकी भव्यता में जगमगाती रही। नीचे उसकी रुपहली ज्योति में नहायी हुई धरती भी उतनी ही सुंदर लग रही थी ; लेकिन अब इस सुंदरता को सराहनेवाला कोई भी आस-पास नहीं था : सभी लोग गहरी नींद सो रहे थे। बस कभी-कभार बीच-बीच में कुत्तों के भूंकने और शराबी कलेनिक की आवाज़ से यह निस्तब्धता भंग हो जाती थी, जो अपनी झोपड़ी की तलाश में सोयी हुई सड़कों पर भटक रहा था।